Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡم   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 8
अंक-1-2

मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

12-19 जमादिउल सानी 1444 हिज्री कमरी, 05-12 सुलह 1402 हिज्री शम्सी, 12-05 जनवरी 2023 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَاذۡکُرۡ رَّبَّکَ فِیۡ نَفۡسِکَ تَضَرُّعًا وَّخِیۡفَۃً وَّدُوۡنَ الۡجَہۡرِ مِنَ الۡقَوۡلِ بِالۡغُدُوِّ وَالۡاٰصَالِ وَلَا تَکُنۡ مِّنَ الۡغٰفِلِیۡنَ

(ऐराफ़ : 206)

(तर्जुमा) : और तू अपने रब को अपने दिल में कभी गिड़गिड़ाते हुए और कभी डरते डरते और बग़ैर आवाज़ किए सुबह और शाम के समय याद किया कर और ग़ाफ़िलों में से न हो

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

तीन आदमियों के लिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चेतावनी

(2358) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तीन आदमी हैं जिन्हें अल्लाह क़ियामत के दिन (दया की नज़र से) नहीं देखेगा और न उनको पाक करेगा और उन्हें दर्द-नाक अज़ाब होगा। एक वह व्यक्ति जिसके पास सफ़र में ज़रूरत से ज़्यादा पानी हो और उसने मुसाफ़िर को नहीं दिया और एक वह व्यक्ति जिसने किसी इमाम की बैअत की और यह बैअत केवल दुनिया की ख़ातिर की। यदि उसने उसे दुनियावी माल दिया तो वह राज़ी हो गया और अगर नहीं दिया तो ख़फ़ा हो गया और एक वह व्यक्ति जिसने अस्र के बाद अपना सामान तिजारत बाज़ार में रखा और कहा उस ज़ात की क़सम है जिसके सिवा कोई उपास्य नहीं मुझे तो उसकी यह यह क़ीमत मिलती थी और फिर कोई शख़्स उसको सच्चा समझे और (ख़रीद ले) इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह आयत पढ़ी (यानी) जो लोग अल्लाह के पास अपने ओहदों और कस्मों के बदले थोड़ी क़ीमत लेते हैं ...

(सही बुख़ारी, भाग 4 किताब मसाका, प्रकाशन 2008 क़ादियान) ★ ★ ★

हम दीन के लिए हैं और दीन की ख़ातिर ज़िंदगी व्यतीत करते हैं, बस दीन की राह में हमें कोई रोक नहीं होनी चाहिए

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

हया : एक दफ़ा का वर्णन है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को सख़्त सिर-दर्द हो रहा था। पास औरतों और बच्चों का शोरों शराबा बरपा था। मौलवी अब्दुल करीम साहिब ने अर्ज़ की कि जनाब को इस शोर से तकलीफ़ तो नहीं होती?

हुज़ूर ने फ़रमाया : "हाँ अगर चुप हो जाएं तो आराम मिलता है।"

मौलवी-साहब ने अर्ज़ की कि फिर हुज़ूर क्यों हुक्म नहीं फ़रमाते? हुज़ूर ने फ़रमाया : "आप उनको नरमी से कह दें। मैं तो कह नहीं सकता।"

चश्म-पोशी : एक ख़ादिमा ने घर से चावल चुराए और पकड़ी गई,घर के सब लोगों ने उसकी निंदा शुरू कर दी। संयोग से हुज़ूर अकदस का भी इस तरफ़ से गुज़र हुआ। वाक़िया सुनाए जाने पर हुज़ूर ने फ़रमाया : "मुहताज है। कुछ थोड़े से उसे दे दो और डाँट डपट न करो। ख़ुदा तआला की सत्तारी का रूप धारण करो।"

ख़िदमत-ए-ख़लक़ : देहक़ानी (उजड्ड) औरतें एक दिन बच्चों की दवाई इत्यादि लेने के लिए आईं। हुज़ूर उनको देखने और दवाई देने में व्यस्त रहे। इस पर मौलवी अब्दुलकरीम साहिब ने अर्ज़ किया कि हज़रत यह तो बड़ी ज़हमत का काम है और इस तरह हुज़ूर का क़ीमती वक़्त ज़ाए हो जाता है। इस के जवाब में हुज़ूर ने फ़रमाया

"यह भी तो वैसा ही देनी काम है। ये मिस्कीन लोग हैं। यहां कोई हस्पताल नहीं। मैं इन लोगों की ख़ातिर हर तरह की अंग्रेज़ी और यूनानी दवाएं मंगवा रखा करता हूँ, जो वक़्त पर काम आ जाती हैं। यह बड़ा सवाब का काम है। मोमिन को इन कामों में सुस्त और बे परवाह नहीं होना चाहिए।"

वक़्त की क़दर : तकल्लुफ़ात में वक़्त ज़ाए करना हुज़ूर अलैहिस्सलाम को न पसंद था। इस के विषय में हुज़ूर ने फ़रमाया "मेरा तो यह हाल है कि पाख़ाना और पेशाब पर भी मुझे अफ़सोस आता है कि इतना वक़्त ज़ाए जाता है, यह भी किसी दीनी काम में लग जाए। और फ़रमाया जब कोई दीनी ज़रूरी काम आ पड़े तो मैं अपने ऊपर खाना पीना और सोना हराम कर लेता हूँ जब तक वह काम न हो जाए। फ़रमाया : हम दीन के लिए हैं और दीन की ख़ातिर ज़िंदगी व्यतीत करते हैं। बस दीन की राह में हमें कोई रोक नहीं होनी चाहिए।"

★ ★ ★

नेकी करने वाले व्यक्ति के दिल पर नेकियों का नूर बढ़ता रहता है, यहाँ तक कि उसका सारा दिल रोशन हो जाता है और वह निजात पा जाता है
और बदी करने वाले कि दिल पर काले धब्बे बढ़ते जाते हैं यहां तक कि एक दिन सारा दिल काला हो जाता है और वह शख़्स हलाक हो जाता है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरः बनीइसराईल की आयत وَکُلَّ اِنۡسَانٍ اَلۡزَمۡنٰہُ طٰٓئِرَہٗ فِیۡ عُنُقِہٖ ؕ وَنُخۡرِجُ لَہٗ یَوۡمَ الۡقِیٰمَۃِ کِتٰبًا یَّلۡقٰىہُ مَنۡشُوۡرًا ○ (तर्जुमा : और (हमने ज़िम्मावार बनाया है) हर इन्सान को (इस तरह कि) हमने उसकी गर्दन में उसके अमल को बांध दिया है और हम क़ियामत के दिन उस (के आमाल) की एक किताब निकाल कर उसके सामने रख देंगे जिसे वह (बिल्कुल) खुली हुई पाएगा) की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

हदीस में आता है कि हर अमल का असर इन्सान के दिल पर होता है। अगर नेकी करे तो उसके दिल पर नूर का एक निशान पैदा हो जाता है और बदी करे तो एक काला निशान पड़ जाता है। इसी तरह नेकी करने वाले शख़्स के दिल पर नेकियों का नूर बढ़ता रहता है। यहाँ तक कि उसका सारा दिल रोशन हो जाता है और वह निजात पा जाता है और बदी करने वाले कि दिल पर काले धब्बे बढ़ते जाते हैं यहां तक कि एक दिन सारा दिल काला हो जाता है और वह शख़्स हलाक हो जाता है। कुछ लोगों ने तायर के अर्थ क़िस्मत के किए हैं किन्तु ये अर्थ उसके नहीं हो सकते क्योंकि तायरा कह कर यह बताया गया है कि अपने अमल का पैदा करने वाला ख़ुद इन्सान ही है ख़ुदा तआला ने जो मुक़र्रर कर दिया वह तो पत्थर कहलाएगा या तौक़। तायरा नहीं कहला सकता।

ये माने भी इस के हो सकते हैं कि हर इन्सान की नेक फ़ाली और बद फ़ाली तो उसकी गर्दन में बंधी हुई है और वह दूसरी चीज़ों में जाकर फ़ालें तलाश करता फिरता है। गर्दन का लफ़्ज़ इस लिए प्रयोग किया कि इन्सान जब नेकी करे तो सिर ऊंचा कर लेता है और जब बदी करे तो ज़िल्लत की वजह से गर्दन नीची कर लेता है। अतः इन शब्दों के प्रयोग से इस तरफ़ तवज्जा दिलाई कि इन्सान अपने आमाल का जायज़ा अपनी गर्दन से कर लिया करे अर्थात देखे कि वह अपने हमराज़ों और हम जलीसों में गर्दन ऊंची कर सकता है या नहीं। अगर उसका दिल और उसके हमराज़ उसे बेऐब क़रार देते हों तो समझ ले कि उसका क़दम नेकी पर है। लेकिन अगर उसका अपना दिल और उसके हमराज़ इस में सौ-सौ गंद पाते हों तो लोगों में फ़ख़र करने से उसे क्या नफ़ा हो सकता है। (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 312 प्रकाशन क़ादियान 2010 ई.) ★ ★ ★

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

हे आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा मैं चाहता था कि अबू बकर को अपने बाद नामज़द कर दूं परंतु मैं जानता हूँ कि अल्लाह और उसके मोमिन बंदे उसके सिवा और किसी पर राज़ी नहीं होंगे

हदीस में स्पष्ट रूप मे आता है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आपस में बातें किया करते थे और कहा करते थे कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अगर किसी का स्थान है तो वह अबू बकर का ही स्थान है

आप रज़ियल्लाहु अन्हो नबुव्वत के गुण रखने वाले थे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो सम्माननीय और सरदारों के इमाम थे और नबियों की विशेषता रखने वाले चुने हुए लोगों मैं से थे

न तुम ख़िलाफ़त को मिटा सकते हो न अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़िलाफ़त से वंचित कर सकते हो क्योंकि ख़िलाफ़त एक नूर है, वह नूर अल्लाह के ज़हूर का एक ज़रीया है (हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो)

“आप तमाम आदाब में हमारे रसूल और आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बतौर प्रतिरूप के थे और आपको हज़रत ख़ैरुल बरिया सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से एक अज़ली मुनासबत थी

और यही वजह थी कि आपको हुज़ूर के फ़ैज़ से पल-भर में वह कुछ हासिल हो गया जो दूसरों को लंबे ज़मानों और दूर दराज़ महाद्वीप में हासिल नहीं हो सका।” (हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओंऔर गुणों का वर्णन

माननीय मुहम्मद दाऊद ज़फ़र साहिब मुरब्बी सिलसिला रकीम प्रैस यू.के की नमाज़-ए-जनाज़ा हाज़िर तथा दो मरहूमीन माननीया रुक़य्या शमीम बेगम साहिबा पत्नी मौलाना करम इलाही ज़फ़र साहिब मरहूम स्पेन और

माननीया ताहिरा हनीफ़ साहिबा पत्नी साहिबज़ादा मिर्ज़ा हनीफ़ अहमद साहिब की नमाज़ जनाज़ा ग़ायब, मरहूमीन का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो’मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 18 नवम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की सीरत और ज़िंदगी के वाक़ियात वर्णन हो रहे थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो का जो स्थान था इस बारे में पहले भी वर्णन हो चुका है। मज़ीद भी वर्णन हुआ है। इस से पता चलता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अपना जांनशीन नामांकित करना चाहते थे बल्कि यह इशारा दिया कि अल्लाह तआला हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ही को आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ख़लीफ़ा और जांनशीन बनाएगा।

इसलिए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी बीमारी में मुझसे फ़रमाया कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो र अपने भाई को मेरे पास बुलाओ ताकि मैं एक तहरीर लिख दूं। मुझे डर है कि कोई ख़्वाहिश करने वाला ख़्वाहिश करे या कोई कहने वाला कहे कि मैं ज़्यादा हक़दार हूँ लेकिन अल्लाह और मोमिन तो सिवाए अबूबकर के किसी और का इंकार करेंगे।(सही मुस्लिम, किताब फ़ज़ायल सहाबा, बाब मन फ़ज़ायल अबी बकर हदीस नम्बर 6181) अर्थात कोई और अगर कहे तो उस का इंकार होगा। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ही जांनशीन बनेंगे।

फिर हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ियल्लाहु अन्हो की भी एक रिवायत है, उन्होंने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। मैं नहीं जानता कि मेरे लिए तुम में बाक़ी रहना कब तक है। अतः तुम मेरी पैरवी करो और उनकी जो मेरे बाद हैं। और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का इशारा अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ था

(सुंन इब्ने माजा, किताब अल् सुन्ना, बाब फ़ी फ़ज़ायल सहाबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हदीस नंबर : 97)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से सुना, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि एक-बार मैं सोया हुआ था। मैंने अपने स्वयं को एक कुँवें पर देखा जिस पर एक डोल था। मैंने इस कुँवें में से जितना अल्लाह ने चाहा खींच कर पानी निकाला। फिर इब्ने अबी क़हाफ़ा ने वह डोल ले लिया और इस से पानी का एक डोल या दो डोल खींच कर निकाले और उनके खींचने में कुछ कमज़ोरी थी और अल्लाह उनकी इस कमज़ोरी पर पर्दापोशी फ़रमाते हुए उनसे दरगुज़र करेगा। फिर वह डोल एक चरसा हो गया यानी चमड़े का एक बड़ा डोल बन गया और इब्न-ए-खत्ताब ने इस को लिया तो मैंने कभी लोगों में ऐसा बहादुर नहीं देखा जो इस तरह खींच कर पानी निकालता हो जिस तरह उम्र निकालते थे। इतना निकाला कि लोग ख़ूब सैर हो कर अपने अपने ठिकानों में जा बैठे। (सही बुख़ारी, किताब फ़ज़ायल असहाबुन्नबी (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम), لو كنت متخذا आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हदीस नंबर 3664) अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और उमर रज़ियल्लाहु अन्हो दोनों के बारे में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बताया कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद जांनशीन होंगे।

उफ़क़ की घटना में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का किरदार और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के फ़ज़ायल जो हैं इस की तफ़सील तो पहले साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो में वर्णन हो चुकी है। यहां केवलएक मुख़्तसर हिस्सा पेश करता हूँ जिससे बख़ूबी वाज़िह हो जाता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर इतना बड़ा आरोप लगाया गया गोया एक पहाड़ टूट गया लेकिन हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के माता पिता का रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से प्रेम और रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का सम्मान बेटी के प्यार से कहीं ज़्यादा बढ़ा हुआ था कि उन्होंने इस सारे अरसा में देर तक अपनी बेटी को इसी हालत में रहने दिया कि जिस हालत में नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रखना उचित समझा यहां तक कि एक मर्तबा जब हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने माता पिता के घर तशरीफ़ ले गईं तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें उसी वक़्त वापिस उनके घर भेज दिया। इसलिए बुख़ारी में है कि उफ़क की घटना के दौरान हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इजाज़त से एक ख़ादिम के साथ अपने माता पिता के घर तशरीफ़ ले गईं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा वर्णन फ़रमाती हैं कि मैं घर में दाख़िल हुई और मैंने अपनी माता उम्मे रुमान को मकान के निचले हिस्सा में और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को घर के बालाख़ाने में पाया। वह क़ुरआन पढ़ रहे थे। मेरी माँ ने कहा हे मेरी बेटी! कैसे आई? मैंने उन्हें बताया और वह वाक़िया उनसे वर्णन किया। कहती हैं मैं क्या देखती हूँ कि इस से उन्हें वह हैरत नहीं हुई जिस क़दर मुझे हुई थी। मेरा जो ख़्याल था कि वाक़िया सुनकर वह परेशान होंगी लेकिन उनको कोई हैरत नहीं हुई। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की माता कहने लगीं कि हे मेरी प्यारी बेटी अपने ख़िलाफ़ होने वाली इस बात को मामूली समझो क्योंकि अल्लाह की क़सम! कम ही ऐसा हुआ है कि कोई ख़ूबसूरत औरत किसी शख़्स के पास हो जिससे वह मुहब्बत रखता हो। इस की सौतनें हूँ मगर वह उस से हसद करती हैं और इस के बारे में बातें बनाई जाती हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं मैं क्या देखती हूँ कि इस का उन पर वह असर नहीं जो मुझ पर है। मैं ने कहा कि मेरे पिता भी ये जानते हैं? उन्होंने कहा हाँ। फिर हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कहा,

अपनी माता से पूछा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम? उन्होंने कहा हाँ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी जानते हैं। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं इस बात पर मेरे आँसू जारी हो गए और मैं रोने लगी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मेरी आवाज़ सुनी और वो घर के बाला ख़ाने में क़ुरआन पढ़ रहे थे। वह नीचे आए और मेरी माँ से कहा उसे क्या हुआ है? उन्होंने कहा उसे वह बात पहुंची है ज ोउस के मुताल्लिक़ कही जा रही है तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की आँखों से आँसू जारी हो गए। कहने लगे हे मेरी प्यारी बेटी मैं तुम्हें क़सम देता हूँ कि तुम अपने घर लौट जाओ। हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैं वापिस आ गई।

(सही बुख़ारी, किताब तफ़सीरुल क़ुरआन, तफ़सीर सूरत अल्नूर, बाब ان الذین یحبون ان تشیع الفاحشة... रिवायत नंबर 4757)

उफ़क की घटना के वर्णन में इस घिनोनी साज़िश और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के मनाक़िब वर्णन करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक जगह बयान फ़रमाया कि हमें ग़ौर करना चाहिए कि वे कौन कौन लोग थे जिनको बदनाम करना मुनाफ़िक़ों के लिए या उनके सरदारों के लिए फ़ायदामंद हो सकता था और किन किन लोगों से इस ज़रीया से मुनाफ़िक़ अपनी दुश्मनी निकाल सकते थे। हुज़ूर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि एक अदना तदब्बुर से मालूम हो सकता है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर इल्ज़ाम लगा कर दो शख़्सों से दुश्मनी निकाली जा सकती थी। एक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और एक हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो क्योंकि एक की वह बीवी थीं और एक की बेटी थीं। ये दोनों वजूद ऐसे थे कि उनकी बदनामी सयासी या इक़्तेसादी लिहाज़ से या दुश्मनीयों के लिहाज़ से बाअज़ लोगों के लिए फ़ायदाबख़्श हो सकती थी या बाअज़ लोगों की अग़राज़ उनको बदनाम करने के साथ वाबस्ता थीं। अन्यथा ख़ुद हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बदनामी से किसी शख़्स को कोई दिलचस्पी नहीं हो सकती थी। ज़्यादा से ज़्यादा आप रज़ियल्लाहु अन्हो से सोतनों का ताल्लुक़ हो सकता था। अर्थात दूसरी पत्नियाँ थीं आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की और यह ख़्याल हो सकता था कि शायद हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सोतनों ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा को रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़रों से गिराने और अपनी नेक-नामी चाहने के लिए इस मुआमला में कोई हिस्सा लिया हो मगर तारीख़ शाहिद है कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की सोतनों ने इस मुआमला में कोई हिस्सा नहीं लिया बल्कि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा का अपना वर्णन है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बीवियों में से जिस बीवी को मैं अपना रक़ीब और मद्द-ए-मुक़ाबल ख़्याल किया करती थी वह हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। उनके इलावा और किसी बीवी को मैं अपना रक़ीब ख़्याल नहीं करती थी परंतु हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा के उस एहसान को कभी नहीं भूल सकती कि जब मुझ पर इल्ज़ाम लगाया गया तो सबसे ज़्यादा ज़ोर से अगर कोई इस इल्ज़ाम का इंकार किया करती थीं तो वह हज़रत ज़ैनब रज़ियल्लाहु अन्हा थीं।

अतः हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से अगर किसी को दुश्मनी हो सकती थी तो वह उनकी सोतों को ही हो सकती थी और वह अगर चाहतें तो इस में हिस्सा ले सकती थीं ता हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निगाह से गिर जाएं और उनकी इज़्ज़त बढ़ जाये। परंतु तारीख़ से साबित है कि उन्होंने इस मुआमला में दख़ल ही नहीं दिया अर्थात दूसरी बीवियों ने। और अगर किसी से पूछा गया तो उसने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तारीफ़ ही की। इसलिए एक और बीवी के मुताल्लिक़ ज़िक्र आता है कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस से इस मुआमले का वर्णन किया तो उसने कहा मैंने तो सिवाए ख़ैर के आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा में कोई चीज़ नहीं देखी। तो हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से अपनी दुश्मनी निकालने का इमकान अगर किसी की तरफ़ से हो सकता था तो उनकी सोतनों की तरफ़ से परंतु उनका इस मुआमले में कोई ताल्लुक़ साबित नहीं होता

इसी तरह मर्दों की औरतों से दुश्मनी की कोई वजह नहीं होती। अतः आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर इल्ज़ाम या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बुग़ज़ की वजह से लगाया गया या हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से बुग़ज़ की वजह से ऐसा किया गया। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जो मुक़ाम हासिल था वह तो इल्ज़ाम लगाने वाले किसी तरह छीन नहीं सकते थे। उन्हें जिस बात का ख़तरा था वह यह था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद भी वो अपनी अग़राज़ को पूरा करने से महरूम न रह जाएं। और वह देख रहे थे कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद ख़लीफ़ा होने का अगर कोई शख़्स अहल है तो वह अबूबकर है।

अतः इस ख़तरा को भाँपते हुए उन्होंने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर इल्ज़ाम लगा दिया ता हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निगाह से गिर जाएं और उनके गिर जाने की वजह से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को मुस्लमानों में जो मुक़ाम हासिल है वह भी जाता रहे और मुस्लमान आप रज़ियल्लाहु अन्हो से बदज़न हो कर अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से बदज़न हो कर इस अक़ीदत को तर्क कर दें जो उन्हें आप रज़ियल्लाहु अन्हो से थी और इस तरह रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़लीफ़ा होने का दरवाज़ा बिल्कुल बंद हो जाएगा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं जिस तरह हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो की ज़िंदगी में पैग़ामियों का गिरोह मुझ पर एतराज़ करता रहता था और मुझे बदनाम करने की कोशिश करता रहता था। अतः यही वजह थी कि ख़ुदा तआला ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर इल्ज़ाम लगने के वाक़िया के बाद ख़िलाफ़त का भी वर्णन किया।

हदीस में स्पष्ट रूप में आता है कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो आपस में बातें किया करते थे और कहा करते थे कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद अगर किसी का मुक़ाम है तो वह अब्बू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का ही है।

फिर हदीसों में आता है कि एक दफ़ा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक शख़्स आया और उसने कहा हे सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप मेरी अमुक ज़रुरत पूरी कर दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया इस वक़्त नहीं, फिर आना। वह बदवी था और तहज़ीब और शिष्टाचार के उसूल से नावाक़िफ़ था। उसने साफ़ कह दिया कि आख़िर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इंसान हैं। अगर मैं फिर आऊँ और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस वक़्त फ़ौत हो चुके हूँ तो मैं क्या करूँ? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगर मैं दुनिया में न हुआ तो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास चले जाना, वह तुम्हारी हाजत पूरी कर देगा। इसी तरह हदीसों में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक दफ़ा हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से कहा।

हे आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा मैं चाहता था कि अबू बकर को अपने बाद नामज़द कर दूं परंतु मैं जानता हूँ कि अल्लाह और मोमिन इसके सिवा और किसी पर राज़ी नहीं होंगे इसलिए मैं कुछ नहीं कहता। उद्देश्य सहाबा यह क़ुदरती तौर पर समझते हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद उनमें से अगर किसी का दर्जा है तो अबू बकर का और वही आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ख़लीफ़ा बनने के योग्य हैं।

मक्की ज़िंदगी तो ऐसी थी कि इस में हुकूमत और इस के इंतेज़ाम का सवाल ही पैदा नहीं होता था लेकिन मदीना में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तशरीफ़ लाने के बाद हुकूमत क़ायम हो गई और तबा मुनाफ़िक़ों के दिलों में यह सवाल पैदा होने लगा क्योंकि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मदीना में तशरीफ़ लाने की वजह से उनकी कई उम्मीदें बातिल हो गई थीं। अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल ने जब यह देखा कि इस की बादशाहत के तमाम इमकानात जाते रहे हैं तो उसे सख़्त ग़ुस्सा आया और जबकि वह बज़ाहिर मुस्लमानों में मिल गया मगर हमेशा इस्लाम में रख़्ने डालता रहता था। और चूँकि अब वह और कुछ नहीं कर सकता था इसलिए उस के दिल में अगर कोई ख़ाहिश पैदा हो सकती थी तो यही कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हों तो मैं मदीना का बादशाह बनूँ लेकिन मुस्लमानों में ज्यूंही बादशाहत क़ायम हुई और एक नया निज़ाम उन्होंने देखा तो उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुख़्तलिफ़ सवालात करने शुरू कर दिए कि इस्लामी हुकूमत का क्या तरीक़ा है? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद इस्लाम का क्या हाल होगा और इस बारे में मुस्लमानों को क्या करना चाहिए? अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल ने जब यह हालत देखी तो उसे ख़ौफ़ पैदा होने लगा कि अब इस्लाम की हुकूमत ऐसे रंग में क़ायम होगी कि इस में इस का कोई हिस्सा न होगा। अर्थात अब्दुल्लाह का कोई हिस्सा न होगा। वह इन हालात को रोकना चाहता था। और इस के लिए जब उसने ग़ौर किया तो उसे नज़र आया कि अगर इस्लामी हुकूमत को इस्लामी उसूल पर कोई शख़्स क़ायम कर सकता है तो वह अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद मुस्लमानों की नज़र उसी की तरफ़ उठती अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ और वह उसे सब दूसरों से मुअज़्ज़िज़ समझते हैं। अतः उसने अपनी ख़ैर इसी में देखी कि उनको बदनाम कर दिया जाए और लोगों की नज़रों से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को गिरा दिया जाए बल्कि ख़ुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निगाह से भी गिरा दिया जाए और इस बदनीयती के पूरा करने का मौक़ा उसे हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा के एक जंग में पीछे रह जाने के वाक़िया से मिल गया और इस ख़बीस ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर गंदा इल्ज़ाम लगा दिया जो क़ुरआन-ए-करीम में इशारतन वर्णन किया गया है और हदीसों में इस की तफ़सील है।

अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल की इस में यह ग़रज़ थी कि इस तरह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो लोगों की नज़रों में भी ज़लील हो जाऐंगे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के ताल्लुक़ात रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से भी ख़राब हो जाएंगे और इस निज़ाम के क़ायम होने में रख़्ना पड़ जाएगा जिसका क़ायम होना उसे कभी न खतम होंने वाला नज़र आता था, नज़र आ रहा था कि अवश्य यह होगा। और जिसके क़ायम होने से इस की उम्मीदें तबाह हो जाती थीं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के

बाद हुकूमत के ख़ाब केवल अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल ही नहीं देख रहा था बाअज़ और लोग भी इस मर्ज़ में मुबतला थे। चूँकि मुनाफ़िक़ अपनी मौत को हमेशा दूर समझता है और वह दूसरों की मौत के मुताल्लिक़ अंदाज़े लगाता रहता है इसलिए अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल भी अपनी मौत को दूर समझता था और वह नहीं जानता था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में ही वह एड़ीयां रगड़ रगड़ कर मरेगा। वह यह क़यास-आराइयाँ करता रहता था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हों तो मैं अरब का बादशाह बनूँगा। लेकिन अब उसने देखा कि अबूबकर की नेकी और तक़्वा और बड़ाई मुस्लमानों में तस्लीम की जाती है। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ पढ़ाने तशरीफ़ नहीं लाते तो अबू बकर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जगह नमाज़ पढ़ाते हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कोई फ़तवा पूछने का अवसर नहीं मिलता तो मुस्लमान अबू बकर से फ़तवा पूछते हैं। यह देखकर अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल को जो आइन्दा की बादशाहत मिलने की उम्मीद लगाए बैठा था सख़्त फ़िक्र लगी और उसने चाहा कि इस का अज़ाला करे। इसलिए इसी अमर का अज़ाला करने और हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो की शौहरत और आप रज़ियल्लाहु अन्हो की अज़मत को मुस्लमानों की निगाह से गिराने के लिए उसने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर इल्ज़ाम लगा दियाता हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर इल्ज़ाम लगने की वजह से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से नफ़रत पैदा हो और हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नफ़रत का यह नतीजा निकले कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुस्लमानों की निगाहों में जो एज़ाज़ हासिल है वह कम हो जाए और उनके आइन्दा ख़लीफ़ा बनने का इमकान न रहे इसलिए इसी अमर का अल्लाह तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में वर्णन फ़रमाया है, फ़रमाता है। اِنَّ الَّذِیۡنَ جَآءُوۡ بِالۡاِفۡكِ عُصۡبَةٌ مِّنۡكُمۡ कि वे लोग जिन्हों ने हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर आरोप लगाया है वे तुम लोगों में से ही मुस्लमान कहलाने वाला एक जत्था है परंतु अल्लाह तआला फ़रमाता है कि لَا تَحۡسَبُوۡهُ شَرًّا لَّكُمۡ ؕ بَلۡ هُوَ خَيۡرٌ لَّكُمۡ. तुम यह ख़्याल न करो कि यह इल्ज़ाम कोई बुरा नतीजा पैदा करेगा बल्कि यह इल्ज़ाम भी तुम्हारी बेहतरी और तरक़्क़ी का मूजिब हो जाएगा। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला कहता है लो अब हम ख़िलाफ़त के मुताल्लिक़ भी उसूल बयान कर देते हैं और तुमको यह भी बता देते हैं कि ये मुनाफ़िक़ ज़ोर मार कर देख लें। ये नाकाम रहेंगे और हम ख़िलाफ़त को क़ायम करके छोड़ेंगे क्योंकि ख़िलाफ़त नबुव्वत का एक भाग है और इलाही नूर के महफ़ूज़ रखने का एक मार्ग है।

(उद्धरित ख़ुतबात ए महमूद, भाग 18 पृष्ठ 451 से 455)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं"अब देखो स्वर-ए-नूर के शुरू से लेकर उसके आख़िर तक किस तरह एक ही मज़मून बयान किया गया है। पहले इस इल्ज़ाम का ज़िक्र किया जो हज़रत आयशा रज़ी अल्लाह तआला अनहा पर लगाया गया था और चूँकि हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा पर इल्ज़ाम लगाने की असल ग़रज़ ये थी कि हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ज़लील किया जाये और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उनके जो ताल्लुक़ात हैं वो बिगड़ जाएं और उसके नतीजा में मुस्लमानों की निगाह में भी उनकी इज़्ज़त कम हो जाये और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद वो ख़लीफ़ा ना हो सकें ।क्योंकि अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल ये भाँप गया था कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बाद मुस्लमानों की निगाह अगर किसी पर उठनी है तो वो अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ही है और अगर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़रीया से ख़िलाफ़त क़ायम हो गई तो अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल की बादशाही के ख़ाब कभी पूरे नहीं होंगे। इस लिए अल्लाह तआला ने इस इल्ज़ाम के वर्णन के तुरंत बाद ख़िलाफ़त का वर्णन किया और फ़रमाया कि ख़िलाफ़त बादशाहत नहीं है। वह तो नूर-ए-इलाही के क़ायम रखने का एक ज़रीया है इस लिए उस का क़ियाम अल्लाह तआला ने अपने हाथ में रखा है। इस का ज़ाए होना तो नूर-ए-नबुव्वत और नूर-ए-उलूहियत का ज़ाए होना है। वह वे इस नूर को ज़रूर क़ायम करेगा और नबुव्वत के बाद बादशाहत हरगिज़ क़ायम नहीं होने देगा और जिसे चाहेगा ख़लीफ़ा बनाएगा बल्कि वह वादा करता है कि मुस्लमानों से एक नहीं मुतअद्दिद लोगों को ख़िलाफ़त पर क़ायम करके नूर के ज़माना को लंबा कर देगा। यह मज़मून ऐसा ही है जैसे कि हज़रत ख़लीफ़ अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाया करते थे कि ख़िलाफ़त केसरी की दुकान का सोडा वाटर नहीं कि जिसका जी चाहे पी ले। इसी तरह फ़रमाया तुम अगर इल्ज़ाम लगाना चाहते हो तो बे-शक लगाओ न तुम ख़िलाफ़त को मिटा सकते हो न अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़िलाफ़त से वंचित कर सकते हो क्योंकि ख़िलाफ़त एक नूर है। वह नूर अल्लाह के ज़हूर का एक ज़रीया है इस को इन्सान अपनी तदबीरों से कहाँ मिटा सकता है।

फिर फ़रमाता है कि इसी तरह ख़िलाफ़त का यह नूर चंद और घरों में भी पाया जाता है और कोई इन्सान अपनी कोशिशों और अपने मकरों से इस नूर के ज़हूर को रोक नहीं सकता।" (ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 18 पृष्ठ 457)

बहरहाल यह ख़िलाफ़त के बारे में एक मज़मून है। उस पर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़ुतबा दिया था। इस से (पता चलता है कि)आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नज़र में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का एक मुक़ाम था और फिर अल्लाह तआला की जो शहादत थी इस से भी साबित हो गया कि नबुव्वत के फ़ौरन बाद जो ख़िलाफ़त का सिलसिला आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणी के मुताबिक़ जारी रहना था वह जारी रहा और इस के बाद अगर बादशाहत आई तो वह बाद की बातें हैं और अल्लाह तआला के वादे के मुताबिक़ हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़रीया से वह निज़ाम (अब) फिर हुआ।

फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के इन्किसार और तवाज़ो के बारे में आता है। हज़रत सईद बिन मसअब रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि एक मर्तबा नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने चंद अस्हाब के हमराह एक मजलिस में बैठे थे कि एक शख़्स हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ झगड़ पड़ा और आप रज़ियल्लाहु अन्हो को तकलीफ़ पहुंचाई। इस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ामोश रहे। उसने दूसरी मर्तबा तकलीफ़ पहुंचाई जिस पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फिर ख़ामोश रहे। उसने तीसरी मर्तबा तकलीफ़ दी तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बदला लिया। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बदला लिया तो नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उठ खड़े हुए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम !क्या आप मुझसे नाराज़ हो गए हैं? इस पर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। आसमान से एक फ़रिश्ता उतरा जो इस बात की तक़्ज़ीब कर रहा था जो वह तेरी निसबत बयान कर रहा था। जब तू ने बदला लिया तो शैतान आ गया और मैं उस मजलिस में नहीं बैठने वाला जिसमें शैतान पड़ गया हो।

(सुंन अबी दाऊद, किताब अदब, बाब फ़ील इंतेसार, हदीस नंबर : 4896)

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे अबू बकर तीन बातें हैं जो सब बरहक़ हैं। किसी बंदे पर किसी चीज़ के ज़रीया ज़ुलम किया जाए और वह केवल अल्लाह की ख़ातिर इस से चशमपोशी करे तो अल्लाह उसे अपनी नुसरत के ज़रीया से मुअज़्ज़िज़ बना देता है। वह शख़्स जो किसी अतीए का दरवाज़ा खोले जिसके ज़रीया उसका इरादा सिला रहमी करने का हो तो अल्लाह उसके ज़रीया उसे माल की कसरत में बढ़ा देता है। तीसरी बात यह है कि वह शख़्स जो सवाल का दरवाज़ा खोले जिसके ज़रीया उसका इरादा माल की कसरत का हो तो अल्लाह उसे उसके ज़रीया क़िल्लत और कमी में बढ़ा देता है। (मजमा अल्ज़वायद, भाग 8 सफ़ा 247 किताब البروالصلة, हदीस 13698 प्रकाशन दारुल कुतुब इलमिया बेरूत 2001 ई .)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के औसाफ़ वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि "आप रज़ियल्लाहु अन्हो मार्फत-ए-तामा रखने वाले आरिफ़ बिल्लाह, बड़े हलीम तबा और निहायत मेहरबान फ़ित्रत के मालिक थे और विनम्रता और मिस्कीनी की वज़ा में ज़िंदगी बसर करते थे। बहुत ही क्षमा करने वाले और पूर्ण रहमत थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो आपनी पेशानी के नूर से पहचाने जाते थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का हज़रत-ए-अक़दस मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से गहरा ताल्लुक़ था और आप रज़ियल्लाहु अन्हो की रूह ख़ैरुल वरा (सल्लल्लाहो वसल्लम) की रूह से पैवस्त थी और जिस नूर ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो के आक़ा महबूब-ए-ख़ुदा को ढाँपा था उसी नूर ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को भी ढाँपा हुआ था और आप रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो वसल्लम) के नूर के लतीफ़ साय और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अज़ीम फ़्यूज़ के नीचे छिपे हुए थे। और फ़हम-ए-क़ुरआन और सय्यद रसूलुल्लाह, फ़ख़र-ए-बनीनौ इंसान सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत में आप रज़ियल्लाहु अन्हो तमाम लोगों से विशेष थे। और जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो पर दूसरे जीवन के और इलाही इसरार मुनकशिफ़ हुए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने समस्त संसारिक ताल्लुक़ात तोड़ दीए और जस्मानी वाबस्तगियों को परे फेंक दिया और अपने आप अपने महबूब सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के रंग में रंगीन हो गए और वाहिद मतलूब हस्ती की ख़ातिर हर मुराद को तर्क कर दिया और तमाम जस्मानी कुदूरतों से आपका नफ़्स पाक हो गया। और सच्चे यगाना ख़ुदा के रंग में रंगीन हो गया और रबबुल आलमीन की रज़ा में गुम हो गया और जब सच्ची इलाही मुहब्बत आप रज़ियल्लाहु अन्हो के तमाम रग और रूप और दिल की इंतहाई गहराईयों में और वजूद के हर ज़र्रा में भर गई। और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के कार्यों और कर्मों में और सभा के शिष्टाचार में इस के अनवार ज़ाहिर हो गए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो सिद्दीक़ के नाम से मौसूम हुए और आपको निहायत फ़रावानी से तर-ओ-ताज़ा और गहरा इलम तमाम अता करने वालों में से बेहतर अता करने वाले ख़ुदा की बारगाह से अता किया गया। सिदक़ आप रज़ियल्लाहु अन्हो का एक रासिख़ मलिका और तिब्बी ख़ास्सा था और इस सिदक़ के आसार-ओ-अनवार आप रज़ियल्लाहु अन्हो मे और आप रज़ियल्लाहु अन्हो के हर क़ौल-ओ-फ़ेअल, हरकत-ओ-सुकून और हवास-ओ-अन्फ़ास में ज़ाहिर हुए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो

आसमानों और ज़मीनों के रब की तरफ़ से मुनइम अलैहि गिरोह में शामिल गए।

आप रज़ियल्लाहु अन्हो कताब-ए-नबुव्वत का एक अजमाली नुस्ख़ा थे। और आप रज़ियल्लाहु अन्हो आरबाब-ए-फ़ज़ीलत और जवाँ मर्दों के इमाम थे और नबियों की सरिशत रखने वाले चीदा लोगों में से थे।"

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "तो हमारे इस क़ौल को किसी किस्म का मुबालग़ा तसव्वुर न कर और न ही उसे नरम रवैय्ये और चशमपोशी की क़सम से महमूल कर और न ही उसे चशमा´मोहब्बत से फूटने वाला समझ बल्कि यह वह हक़ीक़त है जो बारगाह रब से मुझ पर ज़ाहिर हुई।"

आप हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का जो मुक़ाम वर्णन किया है, आप रज़ियल्लाहु अन्हो के ख़वास, आप रज़ियल्लाहु अन्हो के मनाक़िब और जो इतनी तारीफ़ें की हैं हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं यह अल्लाह तआला ने मुझ पर सीधे ज़ाहिर किया हैं।

फिर आप फ़रमाते हैं "और आप रज़ियल्लाहु अन्हो का मशरब रबबुल अरबाब पर तवक्कुल करना और अस्बाब की तरफ़ कम तवज्जा करना था और आप तमाम आदाब में हमारे रसूल और आक़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बतौर ज़िल के थे और आपको हज़रत ख़ैरुल बरिया से एक अज़ली मुनासबत थी और यही वजह थी कि आपको हुज़ूर के फ़ैज़ से पल-भर में वह कुछ हासिल हो गया जो दूसरों को लंबे ज़मानों और दूर दराज़ कालों में हासिल न हो सका।"

(सिररूल खिलाफ़ा, उर्दू तर्जुमा शाय करदा नज़ारत इशात रबवाह, पृष्ठ 101 से 103)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की चौदह साथियों में शमूलीयत

इस के बारे में वर्णन आता है कि हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ियल्लाहु अन्हो ने वर्णन किया कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। यक़ीनन हर नबी को सात नजीब साथी दिए गए या फ़रमाया साथी। सिर्फ साथी कहा और मुझे चौदह दिए गए हैं। हमने उन्हें कहा वह कौन हैं? उन्होंने कहा मैं और मेरे दोनों बेटे और हज़रत जाफ़ररज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत हमज़ह रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अर्थात हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो और उनके दोनों बेटे हज़रत जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत हमज़ह रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मसअब बिन अमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत मकदाद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत हज़ीफ़ रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ियल्लाहु अन्हो। (सुंन अल् तिरमज़ी, किताब अल् मनाकीब, बाब मनाक़िब अल्हसन और हुसैन, हदीस नंबर : 3785)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ से हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को हज की इमारत भी दी गई थी। इस बारे में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने 9 हिज्री में हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीरूल हज बना कर मक्का रवाना फ़रमाया था। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब तबूक से वापस आए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज का इरादा किया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से ज़िक्र किया गया कि मुशरेकीन दूसरे लोगों के साथ मिलकर हज करते हैं और शिरकिया अलफ़ाज़ अदा करते हैं और ख़ाना काबा का नंगे हो कर तवाफ़ करते हैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस साल हज करने का इरादा तर्क कर दिया और हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो को अमीर हज बना कर फ़रमाया। (الروض الانف, भाग 4 पृष्ठ 318 حج ابی بکر بالناس سنة تسع, दारुल कुतुब इलमिया बेरूत)(उमदतुल कारी, शरह सही बुख़ारी, भाग 9 पृष्ठ 384 हदीस 1622 किताब हज्ज, बाब لا یطوف بالبیت عریان. प्रकाशन दारुल अहया तुर्रास 2003)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो तीन सौ सहाबा के साथ मदीना से रवाना हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके साथ बीस क़ुर्बानी के जानवर भेजे जिनके गले में ख़ुद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने हाथ से क़ुर्बानी की अलामत के तौर पर ग़नायाँ पहनाईं और निशान लगाए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद अपने साथ पाँच क़ुर्बानी के जानवर लेकर गए। (सीरतुल हलबिया, भाग 3 पृष्ठ 295 बाब سرایه و بعوثه ﷺ/سریه اُسامه بن زید بن حارثه ؓ الی أبنی, दारुल कुतुब इलमिया बेरूत लुबनान)

रिवायत में आता है कि हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने सूरह तौबा की इबतेदाई आयात का इस हज के अवसर पर ऐलान किया था। इस की तफ़सील तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन में और फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के वर्णन में शुरू में एक दफ़ा ख़ुतबा में मैं बयान कर चुका हूँ। बहरहाल संक्षिप्त यहां वर्णन करता हूँ कि जब सूरत बराअत अर्थात सूरत तौबा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नाज़िल हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को बतौर अमीर हज भिजवा चुके थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया गया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह सूरत हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ भेज दें ताकि वहां पढ़ें तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे अहल-ए-बैत में से किसी शख़्स के सिवा कोई यह फ़रीज़ा मेरी तरफ़ से अदा नहीं कर सकता। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को बुलवाया और उन्हें फ़रमाया कि सूरत तौबा के आग़ाज़ में जो वर्णन हुआ है इस को ले जाओ और क़ुर्बानी के दिन जब लोग मिना में इकट्ठे हों तो उनमें ऐलान कर दो कि जन्नत में कोई काफ़िर दाख़िल नहीं होगा और इस साल के बाद किसी मुशरिक को हज करने की इजाज़त नहीं होगी। न ही किसी को नंगे बदन बैतुल्लाह के तवाफ़ की इजाज़त होगी और जिस किसी के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कोई अनुबंध किया है इस की मुद्दत पूरी की जाएगी।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो इस फ़रमान के साथ रवाना हुए। रास्ते में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से जा मिले। जब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो को रास्ते में देखा या मिले तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि आपको अमीर मुक़र्रर किया गया है या आप मेरे अधीन होंगे? हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आपके मातहत। फिर दोनों रवाना हो गए। आपके मातहत हूँगा लेकिन यह आयात जो हैं वह मैं पढ़ूँगा। बहरहाल हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने लोगों की हज के उमूर पर निगरानी की और इस साल अहल-ए-अरब ने अपनी इन्ही जगहों पर पड़ाव किया हुआ था जहां वह ज़माना-ए-जाहिलीयत में पड़ाव किया करते थे। जब क़ुर्बानी का दिन आया तो हज़रत अली खड़े हुए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के फ़रमान के मुताबिक़ लोगों में इस बात का ऐलान किया जिसका रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया था। जैसा कि मैंने कहा कि इस की तफ़सील में पहले वर्णन कर चुका हूँ।

((السیرة النبویة لابن هشام، حج ابی بکر بالناس سنة تسع واختصاص النبی ﷺ علی بن ابی طالب...832 दारुल कुतुब इलमिया बेरूत लुबनान 2001 ई.)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का यह वर्णन इंशा-ए-अल्लाह आइन्दा भी होगा। इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का वर्णन करना चाहता हूँ। पहला तो माननीय मुहम्मद दाऊद ज़फ़र साहिब इबन चौधरी मुहम्मद यूसुफ़ साहिब का है। मुरब्बी सिलसिला थे। यहां यू.के में रकीम प्रैस में थे। 16 नवंबर को उनकी वफ़ात हुई। 48 साल उम्र थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनका जनाज़ा हाज़िर है। इन शा अल्लाह नमाज़ों के बाद में जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा।

1998 ई. में उन्होंने जामिआ अहमदिया रबवाह से शाहिद का कोर्स मुकम्मल किया। फिर मुरब्बी सिलसिला के तौर पर मुख़्तलिफ़ जगहों पर काम करते रहे। फिर 2001 ई. में इंग्लिस्तान आ गए। यहां रकीम प्रैस में इस्लामाबाद में उनकी तक़र्रुरी हुई। बड़े शौक़ से ख़िदमत बजा लाते रहे। ख़िलाफ़त से बड़ा गहरा अक़ीदत का ताल्लुक़ था। इस्लामाबाद में रिहायश के दौरान कुछ अरसा यह सदर जमात इस्लामाबाद भी रहे। उमरा करने की सआदत भी उनको मिली। मरहूम मूसी भी थे। उनके पीछे रहने वालों में माता पिता और पत्नी के इलावा तीन बेटे और एक बेटी हैं।

उनके माता चौधरी यूसुफ़ साहिब वर्णन करते हैं कि दाऊद को मैंने जब मुरब्बी बनने की तहरीक की तो उन्होंने मेरी इस ख़्वाहिश की मुकम्मल तकमील की। कुछ लोगों ने उनको कहा कि अगर मुरब्बी बनने की बजाय दुनियावी तालीम हासिल करने में इतनी कोशिश करें तो वह ज़्यादा अच्छी मुलाज़मत हासिल कर सकते हैं और अपने घर के माली हालात को बेहतर बना सकते हैं लेकिन दाऊद साहिब ने ऐसे मश्वरों को पूर्णतः खंडित कर दिया। जामिआ से शाहिद मुरब्बी बनने से लेकर वफ़ात तक मुकम्मल वफ़ा के साथ अपना वक़्फ़ निभाया। बहुत इताअत गुज़ार बेटे थे। पिता कहते हैं कि मेरी हर बात मानते रहे, कभी इंकार नहीं किया। हमेशा मुझे सुख पहुंचाने की कोशिश की। माली मुश्किलात के बावजूद कभी भी अपने वक़्फ़ को छोड़ने का नहीं सोचा। जामिआ अहमदिया में तालीम के दौरान माली मुश्किलात की वजह से साईकल को पंक्चर अगर हो जाता था तो उस के पंक्चर लगाने के पैसे नहीं होते थे। कहते हैं घर से साईकल में हवा भर के जामिआ पहुंच जाते थे और वापसी पर इसी तरह करते थे। कभी गिला शिकवा नहीं किया। ख़लीफ़-ए-वक़्त की इताअत करने वाले और मंशा को समझने वाले थे।

उनकी पत्नी मुबारका साहिबा कहती हैं कि बाईस साल हमारा साथ रहा। बहुत नर्म-दिल, मेहनती, ख़ुदा पर बेहद तवक्कुल और हर एक की बेलौस ख़िदमत करने वाला पाया। ज़िंदगी में बहुत से अवसर ऐसे आए जब कुछ चीज़ें बज़ाहिर नामुमकिन लगीं तो मैं कहती कि यह कैसे होगा? तो कहते कि अल्लाह पर तवक्कुल करो सब ठीक हो जाएगा और अल्लाह के फ़ज़्ल से फिर ऐसा ही हो जाता। बच्चों को हमेशा नसीहत करते कि अच्छे इन्सान बनना। कभी किसी के लिए तकलीफ़ का बायस न बनना। कहती हैं बच्चों को बिठा कर अक्सर यह वर्णन करते थे कि आज मैं जो भी हूँ ख़िलाफ़त के ताल्लुक़ की वजह से हूँ और जमाअत की वजह से हूँ। अल्लाह मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं अपने वक़्फ़ को सही निभा

सकूँ। हमेशा उनकी यह ख़्वाहिश होती थी। उनकी बड़ी बेटी दरमाना साहिबा कहती हैं। वह हमसे सिर्फ एक ही बात का मुतालिबा किया करते थे कि हम अच्छे अहमदी मुस्लमान बनें और अपने आस-पास के लोगों का ख़्याल रखें और कभी भी किसी को हमारी वजह से तकलीफ़ न हो।

बड़े बेटे रौहान कहते हैं मेरे पिता साहिब को हमारी रुहानी तर्बीयत की बहुत फ़िक्र रहती थी। जब भी हम कोई सवाल पूछते तो वह एक मुरब्बी होने की वजह से क़ुरआन की तालीम की रोशनी में और दीनी पहलू से जवाब देने की कोशिश करते थे। छोटे बेटे फ़वाद दाऊद हैं पंद्रह साल उनकी उम्र है। उन्होंने कहा कि उनको कैंसर हो गया था और आख़िरी दिनों में इस की बहुत शिद्दत हो गई थी तो आख़िरी दिनों में मुझे कहा कि मैं तुम्हें एक ख़ूबसूरत ज़िंदगी जीते देखना चाहता था जबकि मेरे अल्लाह की इच्छा कुछ और है और मैं उस की रज़ा पर राज़ी हूँ। बहरहाल बच्चों को हमेशा नेकी की,जमाअत से ताल्लुक़ रखा, ख़िलाफ़त से ताल्लुक़ की नसीहत करते रहे। अल्लाह तआला उनकी नसीहतों पर उनको अमल करने की तौफ़ीक़ भी दे और उन के लिए उनकी दुआएं भी करे।

ये बात तो उनके वाक़िफ़ कारों ने, मुरब्बियान ने उमूमन हर एक ने लिखी है कि बहुत हँसमुख और मजलिस लगाने वाले, दिल मोह लेने वाले, हर दिलअज़ीज़ शख़्सियत के मालिक थे और अपने प्रोफ़ैशन में कम्पयूटर और आर्ट वर्क में महारत रखते थे। मुरब्बी थे लेकिन दिमाग़ था कि टेक्नीकल कामों में भी और ऐडीटिंग इत्यादि में भी बड़ा अच्छा चलता था। रक़ीम प्रैस में उन्होंने बड़ा काम किया। अपने हुनर को प्रयोग करने का उन्हें ख़ूब मौक़ा मिला। जमाअती ख़िदमत को हमेशा ख़ुदा के फ़ज़्ल और अपने लिए सआदत तसव्वुर करते थे

फिर एक रिश्तेदार ने यह भी लिखा है कि दूसरों के काम बड़े ख़ामोशी से आते थे। बड़ी ख़ामोशी से ज़रूरतमंद लोगों को रिश्तेदारों को माली मदद भी कर दिया करते थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके बच्चों को भी सब्र और हौसला अता फ़रमाए। उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए और उनके माता पिता को भी सब्र और हौसला दे

दो जनाज़ा ग़ायब भी हैं उनमें से पहला रुक़य्या शमीम बुशरा साहिबा का है जो माननीय करम इलाही ज़फ़र साहिब मरहूम साबिक़ मुबल्लीग स्पेन की पत्नी थीं। पिछले दिनों उनकी भी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन।

यह 1932 ई. में क़ादियान में पैदा हुई थीं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसिया थीं। कई साल तक उनको सदर लजना स्पेन के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ मिली। उनके तीन बेटे और तीन बेटियां हैं। उनके एक पोते अताउल मनाम तारिक़ वाक़िफ़ नौ वाकिफ-ए-ज़िंदगी हैं। सेंट्रल स्पेनिश डैसक के इंचार्ज हैं। एक पोती भी मुरब्बी सिलसिला से ब्याही हुई हैं। बेटे भी दोनों अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से दीन का काम करने वाले हैं। उनके एक बड़े बेटे नायब अमीर भी हैं। रुक़य्या साहिबा के दादा मौलवी फ़ख़रुद्दीन साहिब और दादी साहिब बी-बी साहिबा थीं जो बुनियादी तौर पर भेरा से थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने में बैअत करने के बाद क़ादियान चले गए। उनके नाना भाई अबदुर्रहीम साहब रज़ियल्लाहु अन्हो थे। उनका ताल्लुक़ अजमेर से था। शुरू में सिख धर्म से ताल्लुक़ था। फिर उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के हाथ पर बैअत की सआदत पाई और वह भी बैअत के बाद पढ़ने के लिए क़ादियान आ गए। इसलिए नन्याल दधियाल दोनों सहाबा में से था।

रुक़य्या बेगम साहिबा के बारे में उनके बेटे ने लिखा है कि दाअवतुल अमीर से ख़ास लगाओ था। कई बार उसे पढ़ा और कहा करती थीं कि इस किताब को पढ़ने के बाद मेरे ज़हन में मौजूद बहुत से शकूक-ओ-शुबहात के उत्तर मिल गए। बारह साल की उम्र से ही नमाज़ के लिए दिल में बहुत ज़्यादा लगन थी। अल्लाह तआला से दुआ करती थीं कि उन्हें ईमान के रास्तों और सीधे मार्ग पर चलाए। पर्दे का बहुत ख़्याल रखने वाली थीं। इस सिलसिला में दूसरी ख़वातीन के लिए मिसाल थीं। मरीज़ों और मुहताजों के साथ हमदर्दी रखती थीं। हर मुम्किन तरीक़ से उनकी मदद करने के लिए तैयार रहती थीं।

इबतेदाई दौर में जब मौलाना साहिब के साथ स्पेन आई हैं तो स्पेन में बहुत सारी मुश्किलात का सामना करना पड़ा। अक्सर पुलिस तब्लीग़ की वजह से मौलाना साहिब को हिरासत में ले लेती थी या फिर घर पर छापे मारती थी। पुलिस तब्लीग़ी सरगर्मीयों के सबूत के लिए तलाशी करती लेकिन अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से अपने मियां की तरह इस यक़ीन पर क़ायम थीं कि आख़िर कार अल्लाह तआला उनकी मदद ज़रूर करेगा और समस्त मुश्किलात को दूर कर देगा। जब हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस ने मौलाना साहिब को क़ुर्तुबा में मस्जिद बनाने के लिए मुनासिब जगह तलाश करने की हिदायत फ़रमाई तो इस सिलसिला में उन्होंने भी हर तरह से मदद की। उनके बेटे ने लिखा है कि जब मस्जिद बशारत की तामीर शुरू हुई तो तक़रीबन हर-रोज़ अपने पति के साथ बस इत्यादि के ज़रीया क़ुर्तुबा से पेद्रो आबाद तक तामीराती कामों की पेशरफ़्त, कामों की निगरानी के लिए आती थीं। सारे अख़राजात का रिकार्ड उनके पास होता था। बाक़ायदा एकाऊंटैंट के तौर पर उन्होंने मस्जिद की तामीर में काम किया।

उनके बेटे फ़ज़्ल-ए-इलाही क़मर कहते हैं कि माता साहिबा ने हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की नसीहत को हमेशा अपने सामने रखा। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि अपनी डयूटी को मद्द-ए-नज़र रखना और अपने शौहर को मश्वरे देना। आप एक ऐसे मुल्क जा रही हैं जहां आपने अपने मियां को तब्लीग़ के कामों में सुस्त नहीं बनाना बल्कि ज़्यादा फ़आल करना है। मरने के बाद साथ रहने के लिए बहुत सारा वक़्त होगा। इस बुनियाद को सामने रखते हुए आपको ज़िंदगी के इन दिनों में काम करने के वक़्त को ज़्यादा से ज़्यादा मुफ़ीद बनाने की कोशिश करनी चाहिए और बहरहाल वह इन नसीहतों पर अमल करती रहीं। जो भी सूरत-ए-हाल होती आपने हमेशा अल्लाह तआला की रज़ा को मद्द-ए-नज़र रखते हुए सब्र और हौसले से काम किया। इबतेदाई दिन बहुत मुश्किल थे लेकिन आपने उन्हें भी हिम्मत से बर्दाश्त किया। दीन को दुनिया पर हमेशा मुक़द्दम रखा।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की नसीहतों पर अमल करते हुए यूरोप के ऐसे मुल्क में इस्लामी नमूना क़ायम किया जहां एक वक़्त में इस्लाम का नाम लेना भी जुर्म समझा जाता था। स्पेन में तब्लीग़-ए-अहमदीयत के काम को फैलाने में आपका नुमायां किरदार था। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। उनकी औलाद को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

तीसरा वर्णन माननीया ताहिरा हनीफ़ साहिबा का है जो सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहिब की बेटी थीं और मिर्ज़ा हनीफ़ अहमद साहिब मरहूम जो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी के बेटे थे उनकी पत्नी थीं। पिछले दिनों उनकी भी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसिया थीं। जैसा कि मैंने बताया हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की बहू थीं और मेरी मुमानी भी थीं। 1936 ई. में ये क़ादियान में पैदा हुईं। उनके वालिद सय्यद ज़ैनुल आबेदीन वलीउल्लाह शाह साहिब थे जैसा कि मैंने कहा जिन्हों ने बुख़ारी की काफ़ी जिल्दों की शरह भी लिखी हुई है। बड़े आलिम थे। ये अरब देशों में भी रहे हैं। ताहिरा बेगम साहिबा की माता का नाम सय्यदा सय्यारा साहिबा था। उनका ताल्लुक़ दमिशक़ से था। यह अरब थीं। उनके दादा हज़रत डाक्टर सय्यद अब्दुलसत्तार शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़रीया उनके ख़ानदान में अहमदीयत का नफ़ुज़ हुआ जिन्हों ने 1901 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत की थी और इस के लिए भी पूरे ख़ानदान को अल्लाह तआला ने इस तरह राहनुमाई की कि बच्चों को, बड़ों को, ख़ाबों के ज़रीया से राहनुमाई करता रहा और उनके ईमानों को मज़बूत करता रहा। हज़रत डाक्टर सय्यद अब्दुलसत्तार शाह साहब रज़ियल्लाहु अन्हो हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्ला तआला के नाना थे। इस तरह यह उनकी मामूं ज़ाद थीं। माननीया ताहिरा साहिबा 1972 ई. से 1990 ई. तक लजना इमाइल्ला रबवाह में सैक्रेटरी इस्लाह-ओ-इरशाद की ख़िदमत की तौफ़ीक़ भी पाती रहीं। फिर में भी अपने वक़्फ़-ए-ज़िंदगी पति के साथ उन्होंने कुछ साल, वक़्त गुज़ारा। अल्लाह तआला ने आपको तीन बेटीयों और एक बेटे से नवाज़ा।

उनकी बड़ी बेटी उम्मुल मोमिन कहती हैं कि हमने अम्मी को हमेशा पांचों समय नमाज़ों के इलावा नमाज़ तहज्जुद, रोज़ों और क़ुरआन-ए-मजीद की तिलावत में बाक़ायदगी से व्यस्त देखा। बल्कि इशराक़ वग़ैरा की नमाज़ें भी पढ़ा करती थीं। कभी भी यह रुटीन से नहीं हटती देखें। सब कुछ आप बहुत मुहब्बत और लगन से करती थीं। इबादत भी बड़ी मुहब्बत और लगन से होती थी। कहती है मुझे बहुत हैरत होती थी कि इस के साथ बाक़ी दुनिया-दारी के काम कैसे निभाती हैं। ससुराल के हुक़ूक़, हम-साएगी का हक़ ,मेरे अब्बा का ख़्याल रखना, हम सब के खाने पीने की फ़िक्र ,मेहमान-नवाज़ी का भी बेहद शौक़ था। जमाअत के साथ मुहब्बत, खलिफ़ा जो आपकी ज़िंदगी में आए इन सब के साथ बहुत इख़्लास का ताल्लुक़ था और ख़िलाफ़त की वफ़ादार थीं। वसीयत की हमेशा फ़िक्र रहती थी। ख़लीफ़-ए-वक़्त को ख़त लिखने की तलक़ीन करती थीं और कहती थीं ख़त लिख कर तसल्ली हो जाती है। मुझे भी बड़ी बाक़ायदगी से यह ख़त लिखा करती थीं और बल्कि हर ख़ुतबा के बाद अक्सर उनके ख़त आते थे और इस पर मुख़्तलिफ़ किस्म के तबसरे भी होते थे। बाअज़ बातें जो उनको अच्छी लगती थीं उनमें खासतौर पर उनका वर्णन होता था। कभी कोई एतराज़ वाली बात नहीं करती थीं बल्कि कभी कोई ऐसी बात भी होती जिसमें हम शामिल होते थे तो कहती थीं कि एतराज़ों की बातों में पड़ने की ज़रूरत कोई नहीं है। हमेशा मैंने इन बातों का नुक़्सान ही देखा है, फ़ायदा कभी नहीं देखा।

जैसा कि मैंने कहा ख़िलाफ़त से ग़ैरमामूली ताल्लुक़ था। ग़रीबपरवरी बहुत ज़्यादा थी। एक साहिब अख़तर साहिब हैं उन्होंने मुझे लिखा कि हमारे वालिद ने हमारी वालिदा और हमें छोड़ दिया तो उन्होंने अपने घर में हमें जगह दी और अपने बच्चों की तरह ख़्याल रखा। खाने पीने का, लिबास का, पढ़ाई का और कभी हमें महसूस नहीं होने दिया।

अल्लाह तआला उनसे हमेशा मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। बुज़ुर्गों के क़दमों में जगह दे और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ ★ ★

ख़ुत्बः जुमअः

लोगों में से कोई भी नहीं जो अपनी जान और माल से मुझ पर अबू बकर बिन अबू क़हाफ़ा से बढ़ कर नेक सुलूक करने वाला हो (हदीस)

जाहिलियत के समय में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को क़ुरैश के सरदारों और उनके अशराफ़ और मुअज़्ज़िज़ लोगों में शुमार किया जाता था

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ग़रीबों और मिस्कीनों पर बेहद मेहरबान थे, सर्दीयों में कम्बल ख़रीदते और उन्हें मुहताजों में तक़सीम कर देते

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़िलाफ़त से ज़ाती फ़ायदा कोई हासिल नहीं किया बल्कि आप ख़िदमत-ए-ख़लक़ में ही बड़ाई ख़्याल करते थे

जंग-ए-उहद में जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की अफ़्वाह फैली तो सबसे पहले हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भीड़ को चीरते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे

जिस तरह स्पन में जिब्रील बैतुल-मुक़द्दस के सफ़र में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे
हिज्रत में अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे जो गोया इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अधीन थे, जिस तरह जिब्रील ख़ुदा तआला के अधीन काम करता है

हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं अपनी जान के लिए तो नहीं डरता, में अगर मारा गया तो सिर्फ एक आदमी जाएगा मैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए डरता हूँ, क्योंकि अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नुक़्सान पहुंचा तो सदाक़त दुनिया से मिट जाएगी

“हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो क़ुर्बानी करके भी यह समझते थे कि अभी ख़ुदा का मैं देनदार हूँ और मैं ने कोई अल्लाह तआला पर एहसान नहीं किया बल्कि उसका एहसान है कि उसने मुझे तौफ़ीक़ दी है

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के अज़ीम ख़लीफ़ा राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं और गुणों का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो’मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 नवम्बर 2022 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَ رَسُوْلُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो की सीरत के मुख़्तलिफ़ पहलूओं का वर्णन हो रहा था। इस विषय में उनकी ख़िदमत-ए-ख़लक़ और मुहताजों को खाना खिलाने इत्यादि के बारे में मिलता है कि इस्लाम क़बूल करने से पर्व भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो क़ुरैश के बेहतरीन लोगों में शुमार होते थे और लोगों को जो भी मुश्किल पेश आती थी उन में वे लोग उन से मदद लिया करते थे। मक्का में वह अक्सर मेहमान-नवाज़ी करते और बड़ी बड़ी दावतें किया करते थे।

(सीरतुल हलबिया, भाग 1 पृष्ठ 390 दारुल कुतुब इलमिया बेरूत 2002 ई.)

जाहिलियत के समय में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को क़ुरैश के सरदारों और उनके अशराफ़-ओ-मुअज़्ज़िज़ लोगों में शुमार किया जाता था।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस समाज में शरफ़ाए क़ुरैश में शुमार किया जाता था, अफ़्ज़ल तरीन लोगों में शुमार होता था। लोग अपने मसायल और मुआमलात मैं उनसे रुजू किया करते थे। मक्का में ज़याफ़त और मेहमान-नवाज़ी में इन्फ़िरादी हैसियत के मालिक थे।

(हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो शख़्सियत और कारनामे अज़ मुहम्मद सलाबी अनुवादक, पृष्ठ 52 से 54 दारा बिन कसीर बेरूत 2003 ई.)

फिर लिखा है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ग़रीबों और मिस्कीनों पर बेहद मेहरबान थे। सर्दीयों में कम्बल ख़रीदते और उन्हें मुहताजों में तक़सीम कर देते। (हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो के फ़ैसले, पृष्ठ 378 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर लाहौर)

एक रिवायत में है कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक साल गर्म ऊनी चादरें ख़रीदें अर्थात कम्बल जो दिहात से लाई गई थीं और सर्दी के मौसम में मदीना की बेवा औरतों में ये चादरें तक़सीम की गईं। (कनजुल उम्माल, भाग 3हिस्सा 5 पृष्ठ 245 किताब खिलाफ़ा, हदीस 14076 दारुल कुतुब इलमिया बेरूत 2004 ई.)

एक रिवायत है कि ख़िलाफ़त के मन्सब पर खलीफ़ा होने से पहले आप रज़ियल्लाहु अन्हो एक अज्ञात कुम्बा की बकरियों का दूध दोहा करते थे। जब आप रज़ियल्लाहु अन्हो ख़लीफ़ा बन गए तो इस कुम्बा की एक बच्ची कहने लगी कि अब तो आप हमारी बकरियों का दुध नहीं दोहा करेंगे। यह सुनकर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया क्यों नहीं। अपनी जान की क़सम! मैं तुम्हारे लिए ज़रूर दूध निकालूँगा और मुझे उम्मीद है कि मैंने जिस चीज़ को इख़्तेयार किया है वह मुझे इस आदत से न रोकेगी जिस पर मैं था। इसलिए आप पहले की तरहउनकी बकरियों का दूध निकालते रहे। जब वे बच्चियाँ अपनी बकरियां लेकर आतीं तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो आज़राह-ए-शफ़क़त फ़रमाते दूध का झाग बनाऊँ या न बनाऊँ? अगर वे कहतीं कि झाग बना दें तो बर्तन को ज़रा दूर रख कर दूध दोहते यहाँ तक कि ख़ूब झाग बन जाती। अगर वे कहतीं कि झाग न बनाएँ तो बर्तन थन के क़रीब कर के दूध दोहते ताकि दूध में झाग न बने। आप रज़ियल्लाहु अन्हो नियमित छः माह तक यह ख़िदमत सरअंजाम देते रहे अर्थात ख़िलाफ़त के बाद छः माह तक। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मदीना में रिहायश इख़्तेयार कर ली।

पहले हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दो घर थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में एक घर बाहर था वहां बाहर रहा करते थे लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मस्जिद नब्वी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के क़रीब, अपने घरों के क़रीब भी उनको एक जगह दी थी वहां भी उन्होंने घर बनाया था। इसके

इलावा भी एक घर था। मदीना में भी दो घर थे लेकिन पहले आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़िंदगी में ज़्यादा वक़्त यह जो मुज़ाफ़ात में घर था वहां रहा करते थे। ख़िलाफ़त के बाद फिर मदीना शिफ़्ट हो गए। जब तक मदीना नहीं आए उन बच्चियों की जो ड्यूटी अपने ज़िम्मा आपने ली हुई थी वह नियमित अदा करते रहे। (अल् तबकातुल कुबरा, भाग 3 पृष्ठ 138-139 "अबू बकर सिद्दीक" ومن بنی تیم بن مرّۃ بن کعب,,दारुल कुतुब इलमिया बेरूत 1990 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना के किनारे पर रहने वाली एक बूढ़ी और अंधी औरत का ख़्याल रखा करते थे। आप इसके लिए पानी लाते और उस का काम काज करते। एक मर्तबा आप रज़ियल्लाहु अन्हो जब उसके घर गए तो यह मालूम हुआ कि कोई शख़्स आप से पहले आया है जिसने इस बुढ़िया के काम कर दिए हैं। अगली दफ़ा आप रज़ियल्लाहु अन्हो उस बुढ़िया के घर जल्दी गए ताकि दूसरा शख़्स पहले न आ जाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो छुप कर बैठ गए तो क्या देखते हैं कि यह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं जो इस बुढ़िया के घर आते थे और उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो खलीफ़ा थे।

इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अल्लाह की क़सम यह आप रज़ियल्लाहु अन्हो ही हो सकते थे।

(तारीख़ खुलफ़ा अज़ जलालुद्दीन सीयूती हालात अबूबकर सिद्दीक पृष्ठ 64 प्रकाशन बेरूत ऐडीशन 1999 ई.)

यानी इस नेकी में मेरे से बढ़ने वाले आप रज़ियल्लाहु अन्हो ही हो सकते थे।

एक रिवायत मूसा बिन इस्माईल ने वर्णन की है कि मोतमीर ने अपने बाप से रिवायत की और बताया कि अबू उसमान ने हमसे वर्णन किया कि हज़रत अबदुर्रहमान बिन अबी बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें बताया कि सुफ़्फ़ह वाले मुहताज लोग थे और एक दफ़ा नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसके पास दो आदमियों का खाना हो वह तीसरे को ले जाए और जिसके पास चार का खाना हो वह पांचवें को ले जाए या छटे को या ऐसे ही कुछ शब्द फ़रमाए, अर्थात वे ग़रीब लोग जो बैठे हुए थे लोग उनको अपने घरों में ले जाएं और खाना खिलाएं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तीन आदमियों को ले आए और नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दस को ले गए। और घर में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और तीन और शख़्स थे। हज़रत अबदुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि मैं, मेरा बाप और मेरी माँ। रावी ने कहा है कि मैं नहीं जानता कि आया अबदुर्रहमान ने यह भी कहा कि मेरी बीवी या मेरा ख़ादिम जो कि हमारे और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के घर में मुशतर्का था। और ऐसा हुआ कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाँ शाम का खाना खाया फिर वहीं ठहरे रहे यहां तक कि इशा की नमाज़ पढ़ी फिर वापस आ गए। मेहमानों को घर ले गए थे लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ठहरे रहे और वहीं खाना खा लिया और फिर वापस आए। वर्णन करते हैं कि वहां इतनी देर ठहरे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ उन्होंने शाम का खाना खाया और इतनी रात गुज़रने के बाद आए जितना कि अल्लाह ने चाहा। इन की बीवी ने उनसे कहा किस बात ने आपको अपने मेहमानों से या कहा मेहमान से रोके रखा? अर्थात आपने देर क्यों लगाई। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा: क्या तुमने उन्हें खाना नहीं खिलाया? वह कहने लगीं कि उन्होंने आपके आने तक खाने से इंकार कर दिया था। मेहमानों ने कहा हम नहीं खाएँगे जब तक हज़रत अबू बकर नहीं आते। उन्होंने तो उन को खाना पेश कर दिया था, उनकी पत्नी कहने लगीं मैं ने तो खाना पेश कर दिया था परंतु मेहमानों ने उनकी पेश न चलने दी। हज़रत अबदुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि मैं जा कर छिप रहा। मैं उन से इसलिए छिप गया कहीं मुझे हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से डाँट न पड़े कि क्यों मेहमानों को खाना नहीं खिलाया। फिर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे बेवक़ूफ़! और उन्होंने मुझे सख़्त सुस्त कहा, अबदुर्रहमान उनके बेटे कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मेहमानों से कहा कि खाना खाएं और ख़ुद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कसम खा ली कि मैं हरगिज़ नहीं खाऊंगा। हज़रत अबदुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे कि अल्लाह की क़सम हम जो भी लुक़्मा लेते उसके नीचे से इस से ज़्यादा खाना बढ़ जाता। और उन्होंने इतना खाया कि वे सैर हो गए। और जितना पहले था इस से भी ज़्यादा हो गया।

मेहमानों को खाना खिलाया। मेहमान खाना खाते-जाते थे लेकिन कहते हैं कि वे खाना इतना ही रहता था बल्कि बढ़ जाता था। और सबने पेट भर के खाया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब यह देखा कि खाना तो वैसे का वैसा है बल्कि इस से भी ज़्यादा था तो उन्होंने अपनी बीवी से कहा बनी फ़रास की बहन यह क्या है? उनकी बीवी बोलीं कि क़सम मेरी आँखों की ठंडक की यह तो अब इस से तीन गुना ज़्यादा है जितना पहले था। अर्थात इतना बढ़ गया है खाना। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस से खाया और कहने लगे वह तो सिर्फ़ शैतान था अर्थात उस की तहरीक पर मैंने न खाने की क़सम खाई थी। पहले कहा था नाँ, क़सम है कि मैं नहीं खाऊंगा लेकिन जब देखा खाने में बरकत पड़ रही है तो आप रज़ियल्लाहु अन्होने कहा वह क़सम मेरे से शैतान ने कहलवाई थी लेकिन यह बरकत वाला खाना है, इस से मैं भी खाऊंगा। फिर इस में से एक लुक़्मा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने खाया। इस के बाद वह खाना उठा कर नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास ले गए और वह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाँ सुबह तक रहा। खाना वहां सुबह तक रहा। कहते हैं हमारे और एक क़ौम के दरमयान एक अह्द था और इस की मीयाद गुज़र गई थी। हमने बारह आदमियों को अलग अलग बिठाया और उनमें से हर एक आदमी के साथ कुछ लोग थे। अल्लाह बेहतर जानता है अर्थात कि इन मुआहिदा करने वालों के बारह आदमी थे और हर एक के साथ कुछ लोग भी थे। कहते हैं कि अल्लाह बेहतर जानता है कि हर आदमी के साथ कितने थे परंतु इस क़दर ज़रूर है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इन आदमियों को लोगों के साथ भेजा अर्थात काबिल-ए-ज़िक्र संख्या थी। हज़रत अबदुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हो कहते थे तो उन सबने इस खाने में से खाया या कुछ ऐसा ही कहा। तो यह बरकत अल्लाह तआला ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के खाने में भी एक दफ़ा डाली। (सही बुख़ारी ,किताब अल् मनाकीब, बाब علامات النبوۃ فی الاسلام,नंबर 3581)

हज़रत अबदुर्रहमान बिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया क्या तुम में से कोई है जिसने आज किसी मिस्कीन को खाना खिलाया हो? हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा मैं मस्जिद में दाख़िल हुआ तो एक सायल ने सवाल किया। मैंने अबदुर्रहमान के हाथ में रोटी का एक टुकड़ा पाया। वह मैंने इस से ले लिया और वह इस सायल को दे दिया।

(सुंन अबी दाऊद, किताब ज़कात, बाब لمسألۃ فی المساجد हदीस नम्बर 1670) इस तरह सवाल करने वाले ने सवाल किया था। मेरे बेटे के हाथ में रोटी थी तो मैं ने उससे ले के फिर उस सवाली को दे दी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे अबदुर्रहमान भी ख़िलाफ़त के योग्य थे और लोगों ने कहा भी कि उनकी तबीयत हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से नरम है और लियाक़त भी उनसे कम नहीं। उनको आपके बाद ख़लीफ़ा बनना चाहिए लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़िलाफ़त के लिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को ही मुंतख़ब किया अतिरिक्त इसके कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के स्वभाव में इख़्तेलाफ़ था। अतः हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ख़िलाफ़त से ज़ाती फ़ायदा कोई हासिल नहीं किया बल्कि आप ख़िदमत-ए-ख़लक़ में ही बड़ाई ख़्याल किया करते थे।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं "सूफ़िया की एक रिवायत है। (وَاللّٰہُ اَعۡلَمُ कहाँ तक दुरुस्त है) कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात के बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ग़ुलाम से पूछा कि वे कौन कौन से नेक काम थे जो तेरा आक़ा किया करता था ताकि मैं भी वे काम करूँ। मिनजुमला और नेक कामों के इस ग़ुलाम ने एक काम यह बताया कि रोज़ाना हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रोटी लेकर' खाना लेकर अमुक तरफ़ जाया करते थे और मुझे एक जगह खड़ा कर के आगे चले जाते थे मैं यह नहीं कह सकता कि किस मक़सद के लिए उधर जाते थे। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो उस ग़ुलाम के साथ उस तरफ़ को खाना लेकर चले गए जिसका वर्णन ग़ुलाम ने किया था। आगे जाकर क्या देखते हैं कि एक ग़ार में एक अपाहज अंधा जिसके हाथ पांव नहीं थे बैठा हुआ है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस अपाहज के मुँह में एक लुक़्मा डाला तो वह रो पड़ा और कहने लगा अल्लाह तआला अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो पर रहम फ़रमाए। वह भी क्या नेक आदमी था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा बाबा! तुझे किस तरह पता चला कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ोत हो गए हैं? उसने कहा कि मेरे मुँह में दाँत नहीं हैं इस लिए अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो मेरे मुँह में लुक़्मा चबा कर डाला करते थे आज जो मेरे मुँह में सख़्त लुक़्मा आया तो मैं ने ख़्याल किया कि यह लुक़्मा खिलाने वाला अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो नहीं है बल्कि कोई और शख़्स है और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तो नाग़ा भी कभी नहीं किया करते थे अब जो नाग़ा हुआ तो यक़ीनन वे दुनिया में मौजूद नहीं हैं।" हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "अतः वह कौन सी शैय है जो बादशाहत से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हासिल की?" ख़िलाफ़त या बादशाहत जो उन को मिली इस से तो कुछ नहीं हासिल "क्या सरकारी माल को अपना क़रार दिया" उन्होंने"और हुकूमत की जायदादों को अपना माल क़रार दिया? हरगिज़ नहीं। जो वस्तुएं उनके रिश्तेदारों को मिलीं वे उनकी ज़ाती जायदाद से थीं।' (ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 17 पृष्ठ 495-494) सिर्फ एक इमतेयाज़ जो उनको था वह तो ख़िदमत थी जो उन्होंने की

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "ये दो टुकड़े शरीयत के हैं अल्लाह का हक़ और बंदों का हक़ ये दो चीज़ें हैं। अल्लाह तआला का हक़ और बंदों का हक़। फ़रमाते हैं कि "आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ़ देखो कि किस क़दर ख़िदमात में उम्र को गुज़ारा। और हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो की हालत को देखो कि इतने जोड़ लगाए कि जगह न रही। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक बुढ़िया को हमेशा हलवा खिलाना आदत रखी थी। ग़ौर करो कि यह किस क़दर नियमित था। जब आप

रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ोत हो गए" अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ौत हो गए"तो इस बुढ़िया ने कहा कि आज अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ोत हो गया। इसके पड़ोसियों ने कहा कि क्या तुझ को इलहाम हुआ या वयही हुई? तो उसने कहा नहीं आज हलवा लेकर नहीं आया इस वास्ते मालूम हुआ कि फ़ौत हो गया यानी ज़िंदगी में मुम्किन न था कि किसी हालत में भी हलवा न पहुंचे। देखो! किस क़दर ख़िदमत थी। ऐसा ही सबको चाहिए कि ख़िदमत-ए-खलक करे।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 6 पृष्ठ 54 ऐडीशन 1984 ई.)

आप रज़ियल्लाहु अन्हो का पर्दापोशी का मयार क्या था, इस बारे में रिवायत है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते थे कि अगर मैं चोर को पकड़ता तो मेरी सबसे बड़ी ख़ाहिश यह होती कि ख़ुदा उस के जुर्म पर पर्दा डाल दे

(अल् तबकातुल कुबरा, भाग 5 पृष्ठ 9 बाब الطبقة الاولى من اهل المدينة... दारुल कुतुब इलमिया बेरुत 2012 ई.)

बहादुरी और शुजाअत के बारे में लिखा है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो शुजाअत और बहादुरी का मुजस्समा थे। बड़े बड़े ख़तरे को इस्लाम की ख़ातिर या-नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मुहब्बत-ओ-इशक़ की बदौलत मन में नहीं लाते थे। मक्की ज़िंदगी में जब उन्होंने नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़ात के लिए कोई ख़तरा या तकलीफ़ का अवसर देखा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त और नुसरत के लिए दीवार बन कर सामने खड़े हो जाते। शोब अबी तालिब में तीन साल तक असीरी और कैद का ज़माना आया तो साबित क़दमी, इस्तक़लाल के साथ वहीं मौजूद रहे। फिर हिज्रत के दौरान उन्हें हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सोहबत का एज़ाज़ मिला हालाँकि जान का ख़तरा था। जितनी भी जंगें हुईं हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो न केवल यह कि इन में शामिल हुए बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिफ़ाज़त के फ़रायज़ आप रज़ियल्लाहु अन्हो सरानजाम देते। आप रज़ियल्लाहु अन्हो की इसी जुर्रत और बहादुरी को सामने रखते हुए हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने एक मर्तबा लोगों से पूछा कि हे लोगो! लोगों में से सबसे ज़्यादा बहादुर कौन है? लोगों ने जवाब दिया कि हे अमीरुल मोमनीन !आप हैं। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया जहां तक मेरी बात है मेरे साथ जिसने लड़ाई की मैं ने उस से इन्साफ़ किया अर्थात उसे मार गिराया परंतु सबसे बहादुर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हैं।

हमने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए बदर के दिन ख़ेमा लगाया। फिर हमने कहा कि कौन है जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे? ता आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तक कोई मुशरक न पहुंच पाए तो अल्लाह की क़सम आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़रीब कोई नहीं गया परंतु हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी तलवार को उठाए हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास खड़े हो गए। अर्थात रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कोई मुशरिक नहीं पहुँचेगा परंतु पहले वह हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से मुक़ाबला करेगा। अतः वह सबसे बहादुर शख़्स हैं।

इसी तरह जंग उहद में जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शहादत की अफ़्वाह फैली तो सबसे पहले हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हुजूम को चीरते हुए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे।

कहा जाता है कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास उस वक़्त सिर्फ़ ग्यारह सहाबा किराम मौजूद थे जिनमें हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत तलहा रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत अबू दुजान रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम भी आता है। जंग अहद में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पहरे में घाटी पर मौजूद चंद जाँनिसारों में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी एक थे। ख़ंदक़ की जंग में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साथ थे और ख़ंदक़ की खुदाई के वक़्त आप कपड़े में मिट्टी उठा कर फेंकने वालों में थे।

सुलह हुदैबिया के अवसर पर जान निछावर करने के लिए बैअत करने वालों में तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो शामिल थे ही लेकिन जो मुआहिदा लिखा गया तो जिस ईमानी जुर्रत और इस्तक़लाल और फ़िरासत और इताअत और इश्क़-ए-रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नमूना हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पेश किया हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अपनी बाद की सारी ज़िंदगी उस को नहीं भूले

ग़ज़व-ए-तायफ में भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो शामिल थे और उनके बेटे अब्दुल्लाह बिन अबू बकर भी शामिल थे। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के यह जवान बेटे इस ग़ज़वा में शहीद हो गए थे।

(सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो, उस्ताज़ अबू अंसर, अनुवादक उर्दू, पृष्ठ 367,354, 369, 376 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर लाहौर) (सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर शख़्सीयत और कारनामे, अज़ सलाबी अनुवादक, पृष्ठ 107 फुरकान ट्रस्ट ख़ान गढ़ पाकिस्तान)

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब तीस हज़ार का लश्कर लेकर ग़ज़व-ए-तबूक के लिए निकले तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुख़्तलिफ़ सिपहसालार निर्धारित फ़रमाए और उन्हें झंडे अता फ़रमाए। इस मौक़ा पर सबसे बड़ा झंडा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को अता किया गया।

(सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर, उस्ताज़ अबू अंसर, अनुवादक उर्दू, पृष्ठ 381 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर लाहौर)

हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि मैं ने नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मय्यत में सात ग़ज़वात में शिरकत की और जो जंगी मुहिम्मात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने रवाना फ़रमाएं उनमें से नौ मुहिम्मात में मुझे शामिल होने का मौक़ा मिला और उनमें कभी तो हमारी कमान हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास होती थी और कभी हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहु अन्हो के पास। (सीरत सय्यदना सिद्दीक़ अकबर, उस्ताज़ अबू अंसर,उर्दू, पृष्ठ 356 मुश्ताक़ बुक कॉर्नर लाहौर) और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद जब सारा अरब ही गोया मुर्तद हो गया इन हालात में जिस जुर्रत और शुजाअत का अमली मुज़ाहरा हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया वह अपनी मिसाल आप है। इस का तफ़सीली वर्णन पहले हो चुका है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि "एक दफ़ा कुफ़्फ़ार ने आप (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के गले में पटका डाल कर ज़ोर से खींचना शुरू किया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस बात का इलम हुआ तो वह दौड़े हुए आए और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने इन कुफ़्फ़ार को हटाया और फ़रमाया हे लोगो! तुम्हें ख़ुदा का ख़ौफ़ नहीं आता कि तुम एक शख़्स को महिज़ इसलिए मारते पीटते हो कि वह कहता है अल्लाह मेरा रब है। वह तुमसे कोई जायदाद तो नहीं मांगता फिर तुम उसे क्यों मारते हो

साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं हम अपने ज़माना में सबसे बहादुर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को समझते थे क्योंकि दुश्मन जानता था कि अगर मैं ने मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मार लिया तो इस्लाम ख़त्म हो जाएगा और हमने देखा कि हमेशा अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास खड़े होते थे ताकि जो कोई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर हमला करे उसके सामने अपना सीना कर दें। इसलिए जब बदर के मौक़ा पर कुफ़्फ़ार से मुढ भेड़ हुई तो साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने आपस में मश्वरा करके रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए एक अर्शा तैयार कर दिया और उन्होंने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप इस अर्शा पर तशरीफ़ रखें और हमारी कामयाबी के लिए दुआ करें दुश्मनों से हम ख़ुद लड़ेंगे। फिर उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हम आप को यक़ीन दिलाते हैं कि गो हमारे अंदर भी इख़लास पाया जाता है परंतु वे लोग जो मदीना में बैठे हैं वे हमसे भी ज़्यादा मुख़लिस और ईमानदार हैं। उन्हें पता नहीं था कि कुफ़्फ़ार से जंग होने वाली है वर्ना वे लोग भी इस लड़ाई में ज़रूर शामिल होते।" जंग बदर का पहले बाक़ायदा पता नहीं था तो वे भी शामिल हो जाते।

"हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अगर ख़ुदा-ना-ख़ासता इस जंग में हमें शिकस्त हो तो हमने एक तेज़-रफ़्तार ऊंटनी आपके पास बांध दी है और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को आपके पास खड़ा कर दिया है। उनसे ज़्यादा बहादुर और दिलेर आदमी हमें अपने अंदर और कोई नज़र नहीं आया। हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ोरन अबू बकर के साथ इस ऊंटनी पर बैठ कर मदीना तशरीफ़ ले जाएं और वहां से एक नया लश्कर कुफ़्फ़ार के मुक़ाबला के लिए ले आएं जो हमसे भी ज़्यादा मुख़लिस और वफ़ादार होगा।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "इस वाक़िया से अंदाज़ा लगा लो कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो कितनी क़ुर्बानी करने वाला इन्सान था।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 39 पृष्ठ 220-221)

फिर एक अवसर पर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "एक दफ़ा बाअज़ लोगों ने साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से पूछा कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में सबसे ज़्यादा दिलेर और बहादुर कौन शख़्स था। जिस तरह आजकल शीया सुन्नी का सवाल है इसी तरह इस ज़माना में भी जिस किसी के साथ ताल्लुक़ होता था लोग उसकी तारीफ़ें किया करते थे। जब साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो से यह सवाल किया गया तो उन्होंने जवाब दिया कि हम में से सबसे बहादुर वह शख़्स समझा जाता था जो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास खड़ा होता था। यह नुक्ता एक जंगी आदमी ही समझ सकता है दूसरा नहीं" समझ सकता। जिसको जंग का सही पता हो और जंग के ख़तरात का पता हो उसी को अंदाज़ा हो सकता है कि यह बहादुरी कैसी है जहां सबसे ज़्यादा ख़तरा हो वहां खड़े होना। तो फ़रमाते हैं कि "बात यह है कि जो शख़्स मुल्क और क़ौम की रूह-ए-रवाँ हो दुश्मन चाहता है कि उसे मार डाले ताकि उस की मौत के साथ तमाम झगड़ा ख़त्म हो जाए। इस लिए जिस तरफ़ भी ऐसा आदमी खड़ा होगा दुश्मन इस तरफ़ पूरे ज़ोर के साथ हमला करेगा" जो मर्कज़ हो किसी चीज़ का उसी की तरफ़ दुश्मन ज़्यादा हमला करता है" और ऐसी जगह पर वही शख़्स खड़ा हो सकता है।" अर्थात उसकी

हिफ़ाज़त के लिए, इस मर्कज़ की हिफ़ाज़त के लिए" वही शख़्स खड़ा हो सकता है जो सबसे ज़्यादा बहादुर हो। फिर साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास अक्सर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हुआ करते थे और हमारे नज़दीक वही सबसे ज़्यादा बहादुर थे।"

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 10 पृष्ठ 366)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत बनी इसराईल की दूसरी आयत की तफ़सीर वर्णन फ़रमाते हुए एक जगह फ़रमाते हैं कि "यह बात भी काबिल-ए-तवज्जा है कि اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ से ज़ाहिर होता है कि चलाने वाला कोई दूसरा था। और इसमें चलने वाले का अपना इख़्तेयार नहीं था। हिज्रत का वाक़िया भी इसी तरह हुआ कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात ही को निकले और यह निकलना अपनी मर्ज़ी से नहीं था बल्कि उस वक़्त मजबूर हो कर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नकले जबकि कुफ़्फ़ार ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क़तल करने के लिए आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर का मुहासिरा कर लिया था। अतः इस सफ़र में आपकी मर्ज़ी का दख़ल नहीं था बल्कि ख़ुदा तआला की मशीयत ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मजबूर किया था" अर्थात आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को चलाने वाला, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बाहर निकालने वाला, आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हिज्रत की तरफ़ ले जाने के लिए कहने वाला अल्लाह तआला था और इस की मशीयत की वजह से आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मजबूर हो कर निकले थे। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "फिर जिस तरह स्वप्न में जिब्रील बैतुल-मुक़द्दस के सफ़र में आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे हिज्रत में अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ थे जो गोया इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अधीन थे जिस तरह जिब्रील ख़ुदा तआला के ताबे काम किया करता है। और जिब्रील के माने ख़ुदा तआला के पहलवान के होते हैं। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी अल्लाह तआला के ख़ास बंदे थे और दीन के लिए एक निडर पहलवान की हैसियत रखते थे।" (तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 296)

फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं एक जगह कि "हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तआला के कलाम पर ईमान के होते हुए इन्सानी क़लब में मायूसी पैदा ही नहीं हो सकती।" अल्लाह तआला के ऊपर ईमान-ए-कामिल हो तो दिल में कभी मायूसी पैदा नहीं हो सकती। "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की जो हालत मसलन ग़ार-ए-सौर में हुई उसके बाद कौन सी उम्मीद की हालत बाक़ी रह जाती थी। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात की तारीकी में अपने घर को छोड़कर ग़ार-ए-सौर में जा छुपे। एक ऐसी ग़ार में जिसका मुँह बहुत बड़ा खुला था और हर इन्सान आसानी से इस के अंदर झांक सकता था और कूद सकता था। सिर्फ एक साथी आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हमराह था और फिर दोनों बग़ैर हथियारों और बग़ैर किसी ताक़त के थे। मक्का के हथयारों के साथ लोग आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तआक़ुब में ग़ार-ए-सौर पर पहुंचे और उनमें से बाअज़ ने इसरार किया कि हमें झुक कर अंदर भी एक दफ़ा देख लेना चाहिए ताकि अगर वह अंदर हों तो हम उनको पकड़ सकें। दुश्मन को इतना क़रीब देखकर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो रो पड़े और उन्होंने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! दुश्मन तो सिर पर पहुंच गया है। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस वक़्त बड़े जोश से फ़रमाया لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا। अबू बकर डरते क्यों हो ख़ुदा हमारे साथ है। देखो घबराहट के लिहाज़ से कितनी इंतेहाई चीज़ उस वक़्त आपके सामने आई और इस वाक़िया के बाद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को क़तल या आपकी गिरफ़्तारी में कौन सी कसर बाक़ी रह गई थी। परंतु बावजूद इसके कि दुश्मन ताक़तवर था, सिपाही इसके साथ थे, हथियार उसके पास मौजूद थे और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिल्कुल नहत्ते सिर्फ एक साथी के साथ ग़ार में बैठे थे। न हथियार आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास था न हुकूमत आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ताईद में थी। न कोई जत्था आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास था। आप कसीरूल तादाद दुश्मन को अपने साथ खड़ा देखने के बावजूद फ़रमाते हैं لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا तुम क्यों यह कहते हो कि दुश्मन ताक़तवर है। क्या वह ख़ुदा से भी ज़्यादा ताक़तवर है? जब ख़ुदा हमारे साथ है तो हमारे लिए घबराहट की कौन सी वजह है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की यह घबराहट भी अपने लिए नहीं थी बल्कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए थी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "बाअज़ शीया लोग इस वाक़िया को पेश कर के कहते हैं कि अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो नऊज़ो बिल्लाह बेईमान था। वह अपनी जान देने से डर गया। हालाँकि तारीख़ों में साफ़ लिखा है कि जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं अपनी जान के लिए तो नहीं डरता। मैं अगर मारा गया तो सिर्फ एक आदमी मारा जाएगा। मैं तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए डरता हूँ। क्योंकि अगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नुक़्सान पहुंचा तो सदाक़त दुनिया से मिट जाएगी।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 28 पृष्ठ 416-417)

फिर एक जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि यह बात अंबिया से ही मख़सूस नहीं बल्कि उनसे उतर कर भी अपने अपने ज़माने में ऐसे लोग मिलते हैं कि जो काम उन्होंने उस वक़्त किया वह उनका ग़ैर नहीं कर सकता था।

उदाहरणतः हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो ही को ले लो। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय में कोई शख़्स भी यह नहीं कह सकता था कि आप भी किसी वक़्त अपनी क़ौम की क़ियादत करेंगे। आम तौर पर यही समझा जाता था कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो कमज़ोर तबीयत, सुलह करने वाले और नर्म-दिल वाक़्य हुए हैं। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने की जंगों को देख लो। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी बड़ी जंग में भी हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो को फ़ौज का कमांडर नहीं बनाया। बेशक कुछ छोटे छोटे ग़ज़वात ऐसे हैं जिनमें आप रज़ियल्लाहु अन्हो को अफ़्सर बना कर भेजा गया मगर बड़ी जंगों में हमेशा दूसरे लोगों को ही कमांडर बना कर भेजा जाता था। इसी तरह दूसरे कामों में भी आपको इंचार्ज नहीं बनाया जाता था। बाक़ी क़ुरआन-ए-करीम की तालीम है या क़ज़ा इत्यादि का काम है यह भी आपके सपुर्द नहीं किया गया। (हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द नहीं गया) लेकिन रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जानते थे कि जब अबू बकर का वक़्त आएगा तो जो काम अबू बकर कर लेगा वह उस का ग़ैर नहीं कर सकेगा। इसलिए जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ौत हुए और मुस्लमानों में इख़्तेलाफ़ पैदा हो गया कि कौन ख़लीफ़ा हो उस वक़्त हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़हन में भी यह बात नहीं थी कि आप ख़लीफ़ा होंगे। आप समझते थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो इत्यादि ही उसके अहल हो सकते हैं। अंसार में जो जोश पैदा हुआ और उन्होंने चाहा कि ख़िलाफ़त इन्हीं में से हो क्योंकि वह समझते थे कि हमने इस्लाम की ख़ातिर क़ुर्बानियां की हैं और अब ख़िलाफ़त का हक़ अंसार का ख़्याल था कि हमारा है और इधर मुहाजेरीन कहते थे कि ख़लीफ़ा हम में से हो। ग़रज़ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात पर एक झगड़ा बरपा हो गया। अंसार कहते थे कि ख़लीफ़ा हम में से हो और मुहाजेरीन कहते थे कि ख़लीफ़ा हम में से हो। आख़िर अंसार की तरफ़ से झगड़ा इस बात पर ख़त्म हुआ कि एक ख़लीफ़ा मुहाजेरीन में से हो और एक ख़लीफ़ा अंसार में से हो। इस झगड़े को दूर करने के लिए एक मीटिंग बुलाई गई। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि इस वक़्त मैं ने समझा कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो बेशक नेक और बुज़ुर्ग हैं लेकिन इस गुत्थी को सुलझाना उनका काम नहीं है। (यह बहुत मुश्किल काम है उन के लिए) इस गुत्थी को अगर कोई सुलझा सकता है तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि वह मैं ही हूँ। यहां ताक़त का काम है। नरमी और मुहब्बत का काम नहीं। (और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो तो नरमी और मुहब्बत दिखाने वाले हैं) इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं मैं ने सोच सोच कर ऐसे दलायल निकालने शुरू किए जिनसे यह साबित हो कि ख़लीफ़ा क़ुरैश में से होना चाहिए और यह कि एक ख़लीफ़ा अंसार में से हो और एक मुहाजेरीन में से यह बिल्कुल ग़लत है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि मैंने बहुत से दलायल सोचे और फिर उस मजलिस में गया जो इस झगड़े को निपटाने के लिए मुनाक़िद की गई थी। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो भी मेरे साथ थे। मैं ने चाहा कि तक़रीर करूँ और दलायल से जो मैं सोच कर गया था लोगों को क़ायल करूँ। मैं समझता था कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो इस शौकत और दबदबे के मालिक नहीं कि इस मजलिस में बोल सकें लेकिन मैं खड़ा होने ही लगा था (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं खड़ा होने ही वाला था) कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने गुस्सा से हाथ मार के मुझसे कहा बैठ जाओ और ख़ुद खड़े हो कर तक़रीर शुरू कर दी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि ख़ुदा की क़सम जितनी दलीलें मैं ने सोची थीं वे सबकी सब हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने बयान कर दीं और फिर और भी कई दलायल वर्णन करते चले गए और वर्णन करते चले गए यहां तक कि अंसार के दिल मुतमइन हो गए और उन्होंने ख़िलाफ़त-ए-मुहाजेरीन के उसूल को तस्लीम कर लिया।

यह वही अबूबकर था जिसके विषय मे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद वर्णन करते हैं कि उन्होंने एक दफ़ा किसी झगड़े पर बाज़ार में हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के कपड़े फाड़ दिए और मारने पर तैयार हो गए थे। यह वही अबू बकर था जिसके मुताल्लिक़ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया करते थे कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो का दिल रक़ीक़ है परंतु जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात का वक़्त क़रीब आया तो वफ़ात से क़बल आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने (आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि ने) हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि मेरे दिल में बार-बार यह ख़ाहिश उठती है कि मैं लोगों से कह दूं कि वे मेरे बाद अबू बकर को ख़लीफ़ा बना लें लेकिन फिर रुक जाता हूँ क्योंकि मेरा दिल जानता है कि मेरी वफ़ात के बाद ख़ुदा तआला और उसके मोमिन बंदे अबू बकर के सिवा किसी और को ख़लीफ़ा नहीं बनाएंगे। इसलिए ऐसा ही हुआ आप रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़लीफ़ा मुंतख़ब किया गया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो रक़ीक़ अलक़लब इन्सान थे और इतनी नरम तबीयत के थे कि एक दफ़ा आप रज़ियल्लाहु अन्हो को मारने के लिए बाज़ार में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो

आगे बढ़े और उन्होंने आप रज़ियल्लाहु अन्हो के कपड़े फाड़ दिए लेकिन वही अबू बकर जिसकी नरमी की यह हालत थी एक वक़्त ऐसा आया कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए और उन्हों ने दरख़ास्त की कि तमाम अरब मुख़ालिफ़ हो गया है। सिर्फ मदीना, मक्का और एक छोटी सी बस्ती में नमाज़ बाजमाअत होती है। बाक़ी लोग नमाज़ें पढ़ते तो हैं लेकिन उनमें इतना तफ़र्रुक़ा पैदा हो चुका है कि एक दूसरे के पीछे नमाज़ पढ़ने के लिए तैयार नहीं और इख़्तेलाफ़ इतना बढ़ चुका है कि वह किसी की बात सुनने को तैयार नहीं। अरब के जाहिल लोग जो पाँच पाँच छः छः माह से मुस्लमान हुए हैं मुतालिबा कर रहे हैं कि ज़कात माफ़ कर दी जाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा कि ये लोग ज़कात के मसला को समझते तो हैं नहीं। अगर एक दो साल के लिए उन्हें ज़कात माफ़ कर दी जाए तो क्या हर्ज है? गोया वह उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जो हर वक़्त तलवार हाथ में लिए खड़ा रहता था और ज़रा ज़रा सी बात भी होती थी तो कहता था या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! हुक्म हो तो उस की गर्दन उड़ा दूं वह उन लोगों से इतना भयबीत हो जाता है, इतना डर जाता है, इतना घबरा जाता है कि अबू बकर के पास आकर उनसे दरख़ास्त करता है कि इन जाहिल लोगों को कुछ अरसा के लिए ज़कात माफ़ कर दी जाए हम आहिस्ता-आहिस्ता उन्हें समझा लेंगे। परंतु वे अबू बकर जो इतना रक़ीक़ अलक़लब था कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि मैं एक दफ़ा उन्हें मारने के लिए तैयार हो गया था और बाज़ार में उनके कपड़े फाड़ दिए थे। उसने उस वक़्त निहायत ग़ुस्सा से उमर की तरफ़ देखा यानी जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह बात उनसे कही कि लोगों से कुछ न कहा जाए जो बाग़ी हो रहे हैं, दो साल तक न ज़कात लें हम आगे समझा लेंगे। जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह बात की तो हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने निहायत गुस्से से उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ़ देखा और कहा उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ! तुम इस चीज़ का मुतालिबा कर रहे हो जो ख़ुदा और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नहीं की। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा यह ठीक है लेकिन ये लोग حَدِيثُ الْعَهْد हैं। दुश्मन का लश्कर मदीना की दीवारों के पास पहुंच चुका है। क्या यह अच्छा होगा कि ये लोग बढ़ते चले आएं और मुल्क में फिर कुव्यवस्था की हालत पैदा हो जाए या यह मुनासिब होगा कि उन्हें एक दो साल के लिए ज़कात माफ़ कर दी जाए। या कुव्यवस्था यह है कि किसी तरह सुलह कर ली जाए। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया ख़ुदा की क़सम! अगर दुश्मन मदीना के अंदर घुस आए और उसकी गलियों में मुस्लमानों को तह तेग़ कर दे और औरतों की लाशों को कुत्ते घसीटते फिरें तब भी मैं उन्हें ज़कात माफ़ नहीं करूँगा। ख़ुदा की क़सम अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माने में ये लोग रस्सी का एक टुकड़ा भी बतौर ज़कात देते थे तो मैं वो भी उनसे ज़रूर वसूल करूँगा।

फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया उमर अगर तुम लोग डरते हो तो बेशक चले जाओ। मैं अकेला ही उन लोगों से लड़ूँगा और उस वक़्त तक नहीं रुकूँगा जब तक ये अपनी शरारत से बाज़ नहीं आ जाते। इसलिए लड़ाई हुई और आप विजय हुए अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़ातेह हुए और अपनी वफ़ात से पहले पहले आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुबारा सारे अरब को अपने अधीन कर लिया। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अपनी ज़िंदगी में जो काम किया वह इंही का हिस्सा था। कोई और शख़्स वह काम नहीं कर सकता था। (उद्धरित ख़ुतबात महमूद, भाग 30 पृष्ठ 198 से 200)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि मक्का के सरदारों को लोगों में से इस किस्म की इज़्ज़त और अज़्मत हासिल थी कि लोग उनके सामने बात करते हुए डरते थे और उनके एहसानात भी लोगों पर इस कसरत के साथ थे कि कोई शख़्स उनके सामने आँख तक नहीं उठा सकता था। उनकी इस अज़्मत का पता उस वक़्त लग सकता है कि सुलह हुदैबिया के मौक़ा पर जिस सरदार को मक्का वालों ने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से गुफ़्तगु करने के लिए भेजा उसने बातों बातों में रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रीश-ए-मुबारक को हाथ लगा दिया। यह देखकर एक सहाबी ने ज़ोर से अपना तलवार का कुंदा, जो दस्ता होता है तलवार का उसके हाथ पर मारा और कहा अपने नापाक हाथ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रीश-ए-मुबारक को मत लगाओ। उसने आँख उठा कर देखाता कि मालूम करे कि यह कौन शख़्स है जिसने मेरे हाथ पर तलवार का दस्ता मारा है। साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो चूँकि ख़ुद पहने हुए थे इसलिए उनको सिर्फ आँखें और उनके हलक़े ही दिखाई देते थे। वह थोड़ी देर ग़ौर से देखता रहा। फिर कहने लगा क्या तुम अमुक शख़्स हो? उन्होंने कहा कि हाँ। उसने कहा क्या तुम्हें मालूम नहीं मैं ने अमुक अमुक अवसर पर तुम्हारे ख़ानदान को अमुक मुसीबत से निजात दी और अमुक अवसर पर तुम पर अमुक एहसान किया क्या तुम मेरे सामने बोलते हो? हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो उस एहसान का, इस बात का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि आजकल हम देखें तो एहसान फ़रामोशी का माद्दा लोगों में इस क़दर आम हो चुका है किसी पर शाम को एहसान करो तो सुबह को वे भूल जाता है और कहता है क्या मैं अब सारी उम्र उस का ग़ुलाम बना रहूं? मेरे पर एहसान कर दिया तो क्या हो गया वह सारी उम्र की ग़ुलामी छोड़ एक रात के एहसान की क़दर तक बर्दाश्त नहीं कर सकता मगर अरबों में एहसानमंदी का जज़्बा बदरजा-ए-कमाल पाया जाता था। अब यह एक निहायत ही नाज़ुक मौक़ा था मगर जब उसने अपने एहसानात गँवाए तो इस सहाबी की नज़रें ज़मीन में गड़ गईं और शर्मिंदा हो कर पीछे हट गया। एहसान की इतनी क़दर होती थी। इस पर फिर उसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बातें करनी शुरू कर दीं और कहा मैं अरब का बाप हूँ। मैं तुम्हारी मिन्नत करता हूँ कि तुम अपनी क़ौम की इज़्ज़त रख लो और देखो यह जो तुम्हारे इर्द-गिर्द जमा हैं यह तो मुसीबत आने पर फ़ौरन भाग जाएंगे और तुम्हारे काम आख़िर तुम्हारी क़ौम ही आएगी। अतः क्यों अपनी क़ौम को ज़लील करते हो मैं अरब का बाप हूँ। वह शख़्स आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को बार-बार यही कहता था कि मैं अरब का बाप हूँ। तुम मेरी बात मान लो और जिस तरह मैं कहता हूँ इसी तरह उमरा किए बग़ैर वापस चले जाओ। इसी दौरान में उसने अपनी बात पर-ज़ोर देने और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मनवाने की ख़ातिर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की रीश-ए-मुबारक को फिर हाथ लगा दिया और गो आपको, आपकी रीश-ए-मुबारक को उस का हाथ लगाना विनीति के रंग में था, बड़ी मिन्नत के रंग में कहना चाहता था और इसलिए था कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वे अपनी बात मनवाए मगर चूँकि इस में अपमान का पहलू भी पाया जाता था इसलिए साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो इसे बर्दाश्त न कर सके और ज्ंहूी उसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दाढ़ी को हाथ लगाया फिर किसी शख़्स ने ज़ोर से अपना हाथ उस के हाथ पर मारा और कहा अपने नापाक हाथ रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की पवित्र बालों की तरफ़ मत बढ़ा। उसने फिर आँखें उठाईं और ग़ौर से देखता रहा कि ये कौन शख़्स है जिसने मुझे रोका है और आख़िर पहचान कर उसने अपनी आँखें नीची लें।

इस शख़्स ने जो काफ़िरों का नुमाइंदा बन के आया था जब उसने पहचाना उस शख़्स को तो आँखें नीची कर लीं। देखा यह तो अबूबकर हैं तो कहने लगा अबूबकर मैं जानता हूँ कि तुम पर मेरा कोई एहसान नहीं तुम ऐसे शख़्स हो जिस पर मैंने कोई एहसान किया।

अतः वे दूसरों पर इस क़दर एहसानात करने वाली क़ौम थी कि सिवाए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के जिस क़दर अंसार और मुहाजिर वहां थे इन सब पर उस एक रईस का कोई न कोई एहसान था और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के सिवा और किसी में यह जुर्रत नहीं थी कि उस के हाथ को रोक सके।

(उद्धरित ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 20 पृष्ठ 484-485)

वही वाहिद शख़्स थे जिन पर इस शख़्स का कोई एहसान नहीं था।

फिर एक जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "ज़कात तो ऐसी ज़रूरी चीज़ है कि जो नहीं देता वह इस्लाम से ख़ारिज हो जाता है। रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में जब कुछ लोगों ने ज़कात से इंकार कर दिया और कहा कि

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيهِم بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ

(अल् तौबा : 103) इस में तो रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हुक्म है कि तू ले। अब जब कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नहीं रहे तो और कौन ले सकता है? नादानों ने यह न समझा कि वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़ायम मक़ाम होगा जो लेगा लेकिन जहालत से उन्होंने कह दिया कि हम ज़कात नहीं देंगे। उधर तो लोगों ने ज़कात देने से इंकार कर दिया और इधर फ़साद हो गया क़रीबन सारा अरब मुर्तद हो गया और कई मुद्दई नबुव्वत खड़े हो गए। यूं मालूम होता था कि नऊज़ूबिल्लाह (हम इससे ख़ुदा की शरण चाहते हैं) इस्लाम तबाह होने लगा है। ऐसे नाज़ुक वक़्त में साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो उन लोगों से जिन्हों ने ज़कात देने से इंकार कर दिया है फ़िलहाल नरमी से काम लें। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जिनको बहुत बहादुर कहा जाता है वह कहते हैं कि गो मैं कितना ही बहादुर हूँ परंतु अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो जितना नहीं क्योंकि मैं ने भी उस वक़्त यही कहा कि उनसे नरमी की जाए। पहले काफ़िरों को ज़ेर कर लें फिर उनकी इस्लाह कर लेंगे लेकिन अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने कहा इब्ने क़हाफ़ा की क्या हैसियत है? कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दीए हुए हुक्म को बदल दे मैं तो उनसे उस वक़्त तक लड़ूँगा जब तक कि ये लोग पूरी तरह ज़कात न दें और अगर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के वक़्त ऊंट बाँधने की एक रस्सी जो देते थे" वह भी न दें" वो भी अदा न कर दें।

उस वक़्त साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो को पता लगा कि ख़ुदा का बनाया हुआ ख़लीफ़ा किस क़दर जुर्रत और दिलेरी रखता है? आख़िर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन को पराजय किया और उन से ज़कात लेकर छोड़ी।"

(इस्लाह-ए-नफ़्स, अनवारुल उलूम, भाग 5 पृष्ठ 452)

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो की माली क़ुर्बानी के बारे में आता है, एक मुसन्निफ़ लिखता है कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हो जब ईमान लाए तो उनके पास चालीस हज़ार दिरहम की बड़ी रक़म मौजूद थी और ज़ाहिर है कि माल-ए-तिजारत, अस्बाब-ओ-अमलाक उस के इलावा थे बल्कि एक रिवायत के मुताबिक़ तो उनके पास एक मिलियन यानी दस लाख दिरहम की रक़म मौजूद थी। मक्का में आम मुस्लमानों की इआनत और ग़रीब मुस्लमानों की कफ़ालत पर हज़ारहा दिरहम ख़र्च कर दिए जबकि

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 08 Thursday 05-12 January 2023 Issue No. 1-2

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

जब उन्होंने हिज्रत की तो पाँच छः हज़ार दिरहम नक़द साथ थे। एक रिवायत के मुताबिक़ वह यह सारी रक़म रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ज़रूरीयात के लिए बचा कर रखते गए और बवक़्त-ए-हिज्रत मदीना लेकर आए थे। इसी रक़म से उन्होंने हिज्रत के दौरान सफ़र के अख़राजात के इलावा बाद हिज्रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अहल-ए-ख़ानदाँ में से बाअज़ के सफ़र के अख़राजात दिए थे और मदीना में मुस्लमानों के लिए कुछ ज़मीन भी ख़रीदी थी।

(मक़ालात सीरत अज़ डाक्टर मुहम्मद हुमायूँ अब्बास भाग 2 पृष्ठ 433-434 मकतबा इस्लामिया लाहौर 2015 ई.) (तबकात अलकुबरा, भाग 3 पृष्ठ 128 "अबू बकर सिद्दीक" ومن بنی تیم بن مرّۃ بن کعب,दारुल कुतुब इलमिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत इब्न-ए-अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी आख़िरी बीमारी में कि जिसमें आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात हुई आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपना सिर एक कपड़े से बाँधा हुआ था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मंच पर तशरीफ़ फ़र्मा हुए और अल्लाह की हमद-ओ-सना वर्णन की और फ़रमाया लोगों में से कोई भी नहीं जो बलिहाज़ अपनी जान और माल के मुझ पर अबू बकर बिन अब्बू क़हाफ़ा से बढ़कर नेक सुलूक करने वाला हो।

(सही बुख़ारी, किताब الصلاۃ،باب الخوخۃ والممر فی المسجد, नंबर : 467)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे किसी माल ने कभी वह फ़ायदा नहीं पहुंचाया जो मुझे अबू बकर के माल ने फ़ायदा पहुंचाया है। रावी कहते हैं कि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो यह सुनके रो पड़े और अर्ज़ क्या हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मैं और मेरा माल तो सिर्फ आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ही के लिए हैं हे अल्लाह के रसूल

(सुंन इब्ने माजा, मुक़द्दमा, बाब फ़ी फ़ज़ायल असहाब-ए-रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम दीस नंबर : 94)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो बयान फ़रमाते हैं कि "एक जिहाद के अवसर के विषय में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं मुझे ख़्याल आया हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो हमेशा मुझसे बढ़ जाते हैं। आज मैं उनसे बढ़ूँगा। यह ख़्याल कर के मैं घर गया और अपने माल में से आधा माल निकाल कर रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश करने के लिए ले आया। वह ज़माना इस्लाम के लिए इंतेहाई मुसीबत का दौर था। लेकिन हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपना सारा माल आए" एक जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि "हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो आपना सारा धन यहाँ तक कि लिहाफ़ और चारपाइयाँ भी उठा कर ले आए।" बहरहाल "और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश कर दिया।" सारा माल। "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो घर में क्या छोड़ आए हो? उन्होंने अर्ज़ किया। अल्लाह और उस का रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं। यह सुनकर मुझे सख़्त शर्मिंदगी हुई और मैं ने समझा कि आज मैं ने सारा ज़ोर लगा कर अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो से बढ़ना चाहा था मगर आज भी मुझ से अबूबकर आगे बढ़ गए।"

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो कहते हैं कि "संभव है कोई कहे कि जब हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हो अपना सारा माल ले आए थे तो फिर घर वालों के लिए उन्होंने क्या छोड़ा? इसके मुताल्लिक़ याद रखना चाहिए कि इस से मुराद घर का सारा अंदोख़्ता था। वह ताजिर थे और जो माल तिजारत में लगा हुआ था वह नहीं लाए थे और ना मकान बेच कर आ गए थे।"

(फ़ज़ायलुल क़ुरआन : 3) अनवारुल उलूम, भाग 11 पृष्ठ : 577)(ख़ुतबात-ए-महमूद, भाग 37 पृष्ठ 134-135) बल्कि वह घर का सामान ले के आए थे।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि "इस वाक़िया से हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के दो कमाल ज़ाहिर होते हैं एक यह कि वह क़ुर्बानी में सबसे आगे बढ़ गए और दूसरे यह कि बावजूद अपना सारा माल लाने के फिर सबसे पहले पहुंच गए और जिन्हों ने थोड़ा दिया था वह इस फ़िक्र में ही रहे कि कितना घर में रखें और कितना लाएंगे। परंतु बावजूद उस के हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो के विषय मेँ यह कहीं नहीं आता कि उन्होंने दूसरों पर एतराज़ किया हो।" सारा कुछ ले आए लेकिन यह नहीं हुआ कि उन्होंने एतराज़ किया। देखो मैं ले आया हूँ और वह दूसरे नहीं ले आते।

"हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हो क़ुर्बानी करके भी यह समझते थे कि अभी ख़ुदा का मैं दीनदार हूँ और मैं ने कोई अल्लाह तआला पर एहसान नहीं किया बल्कि उस का एहसान है कि उसने मुझे तौफ़ीक़ दी" है।

(ख़ुतबात महमूद, भाग 17 पृष्ठ 580)

अतः हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो से ज़िमन में वर्णन फ़र्मा रहे हैं कि माली क़ुर्बानी करने वालों को अपना देखना चाहिए। इन मुनाफ़िक़ों की तरह नहीं होना चाहिए जो ख़ुद भी चंदा नहीं देते और अगर थोड़ा सा दे दें तो दूसरों पर एतराज़ करते हैं कि देखो अमुक ने कम दिया और अमुक ने इतना दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की तो वह पाक जमाअत थी। जिसकी तारीफ़ में क़ुरआन शरीफ़ भरा पड़ा है। क्या आप लोग ऐसे हैं? जब ख़ुदा कहता है कि हज़रत मसीह के साथ वे लोग होंगे। जो साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो के दोश बदोश होंगे। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो तो वे थे। जिन्हों ने अपना माल, अपना वतन राह़-ए-हक़ में दे दिया। और सब कुछ छोड़ दिया। हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़ियल्लाहु अन्हो का मुआमला अक्सर सुना होगा। एक दफ़ा जब राह़-ए-ख़ुदा में माल देने का हुक्म हुआ तो घर का समस्त माल ले आए। जब रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दरयाफ़्त किया कि घर में क्या छोड़ आए। तो फ़रमाया कि ख़ुदा और रसूल को घर में छोड़ आया हूँ। रईस मक्का हो और कम्बल पोश। ग़ुरबा का लिबास पहने। यह समझ लो कि वे लोग तो ख़ुदा की राह में शहीद हो गए। इन के लिए तो यही लिखा है कि तलवारों) के नीचे बहिश्त है।"

(मलफ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 43 ऐडीशन 1984 ई.) यानी तलवारों के नीचे बहिश्त है।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं "साहाबा रज़ियल्लाहु अन्हो की हालत देखो जब इमतेहान का वक़्त आया तो जो कुछ किसी के पास था अल्लाह तआला की राह में दे दिया। हज़रत अबू बकर सिद्दीक रज़ियल्लाहु अन्हो सबसे अव़्वल कम्बल पहन कर आ गए। फिर उस कम्बल की बदला भी अल्लाह तआला ने क्या दिया" अर्थात कि सब कुछ ले आए और सिर्फ एक कम्बल ओढ़ लिया अपने ऊपर। अल्लाह तआला ने क्या जज़ा दी "कि सबसे अव़्वल ख़लीफ़ा वही हुए।" फ़रमाया "ग़रज़ यह है कि असली ख़ूबी" अर्थात सबसे अव़्वल काम करना कि "ख़ैर और रुहानी लज़्ज़त से परिपूर्ण होने के लिए वही माल काम आ सकता है। जो ख़ुदा की राह में ख़र्च किया जाए।"

(मलफ़ूज़ात,भाग 1 पृष्ठ 210-211 ऐडीशन 1984 ई.)

इन शा अल्लाह तआला बाक़ी आगे वर्णन होगा

★ ★ ★

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad